सम्पादकीय 2
वातावरण में छाई विषाक्तता से बचाव और उसके शमन हेतु हर व्यक्ति के लिए जरूरी हो गई है युगसाधना

भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा
शान्तिकुञ्ज में सम्पन्न राष्ट्रीय संगोष्ठी में सर्वाधिक विद्यार्थी शामिल करने वाले 10 जिले सम्मानित किए गए 6

पूर्व उपराष्ट्रपति माननीय श्री वेंकैया नायडू जी ने दक्षिण भारतीय प्रांतों के लिए रवाना की ज्योति कलश यात्रा 7

सीमित साधनों में जीवनयापन और लोकमंगल के लिए अधिकाधिक समर्पण, यही है शिव का दर्शन। 8

समाज निर्माण एवं सांस्कृतिक पुनरुत्थान के लिए समर्पित

पाक्षिक

प्रज्ञा अभियान

मध्यप्रदेश

संस्थापक, संरक्षक : युगऋषि पं श्रीराम शर्मा आचार्य एवं वंदनीया माता भगवती देवी शर्मा

E-mail: news@awgp.org

16 मार्च 2025

वर्ष : 37, अंक : 18
प्रकाशन स्थल : शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार
प्रकाशन तिथि : 12 मार्च 2025
वार्षिक चंदा : ₹ 80/-
वार्षिक चंदा (विदेश) : ₹ 1000/-
प्रति अंक : ₹ 4/-

RNI-NO.38653/ 1980 Postel R.No.UA/DO/DDN/ 16 / 2024-26 Licenced to Post Without Prepayment vide WPP No. 04/2024-26

।। ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।।

उस प्राणस्वरूप, दुःखनाशक, सुखस्वरूप, श्रेष्ठ, तेजस्वी, पापनाशक, देवस्वरूप परमात्मा को हम अंतःकरण में धारण करें। वह परमात्मा हमें सन्मार्ग में प्रेरित करे।

श्रद्धा और शालीनतायुक्त जीवन जीयें

साधना से सिद्धि एवं परमात्मा की प्राप्ति का प्रबल आधार है श्रद्धा

युगऋषि वेदमूर्ति, तपोनिष्ठ पं. श्रीराम शर्मा आचार्य

श्रद्धा का अर्थ है-आत्मविश्वास। इस विश्वास के सहारे मनुष्य अभाव में, तंगी में, निर्धनता में, कष्ट में, एकान्त में भी घबराता नहीं। जीवन के अन्धकार में श्रद्धा प्रकाश बनकर मार्गदर्शन करती है और मनुष्य को उस शाश्वत लक्ष्य से विलग नहीं होने देती। आत्मदेव के प्रति, ईश्वर के प्रति, जीवन लक्ष्य के प्रति हृदय में कितनी प्रबल जिज्ञासा है, जीवन की इस विशालता को जानना हो तो मनुष्य के अन्तःकरण की श्रद्धा को नापिये। यह वह दैवी मार्गदर्शन है, जिसे प्राप्त कर सांसारिक बाधाओं का विरोध कर लेना सहज हो जाता है।

- अखण्ड ज्योति, सितम्बर 1985

हमारे चिन्तन में गहराई हो, साथ ही श्रद्धायुक्त नम्रता भी। अन्तरात्मा में दिव्य-प्रकाश की ज्योति जलती रहे। उसमें प्रखरता और पवित्रता बनी रहे तो पर्याप्त है। पूजा के दीपक इसी प्रकार टिमटिमाते हैं। आवश्यक नहीं कि उनका प्रकाश बहुत दूर तक फैले। छोटे-से क्षेत्र में पुनीत आलोक जीवित रखा जा सके तो वह पर्याप्त है।

श्रद्धा वह प्रकाश है जो आत्मा को सत्य की प्राप्ति के लिए बनाये गये मार्ग दिखाती रहती है। जब भी मनुष्य एक क्षण के लिए लौकिक चमक-दमक तथा कामिनी और कंचन के लिए मोहग्रस्त होता है तो माता की तरह ठण्डे जल से मुँह धोकर जगा देने वाली शक्ति यह श्रद्धा ही होती है। सत्य के सद्गुण, ऐश्वर्य-स्वरूप एवं ज्ञान की थाह अपनी बुद्धि से नहीं मिलते। वे तब मिलते हैं जब उसके प्रति सविनय प्रेम-भावना विकसित होती है और उसी को 'श्रद्धा' कहते हैं। श्रद्धा सत्य की सीमा तक साधक को साधे रहती है, सँभाले रहती है।

श्रद्धा के बल पर ही मलिन चित्त अशुद्ध चिन्तन का परित्याग करके बार-बार परमात्मा के चिन्तन में लगा रहता है। बुद्धि भी जड़-पदार्थों में तन्मय न रहकर परमात्मज्ञान में अधिक से अधिक सूक्ष्मदर्शी होकर दिव्य भाव में बदल जाती है। मनुष्य का स्वयं का ज्ञान और तार्किक शक्ति इतनी बलवान नहीं होती कि वह निरन्तर उचित-अनुचित, आवश्यक-अनावश्यक के यथार्थ और दूरवर्ती परिणामों को आत्मा के अनुकूल होने का विश्वास दे सके। तर्क प्रायः व्यर्थ से दिखाई देते हैं। ऐसे समय जब अपने कर्मों के औचित्य या अनौचित्य को परम प्रेरक शक्ति के हाथों में सौंप देते हैं तो एक प्रकार की निश्चिन्तता मन में आ जाती है, मन का बोझ हल्का हो जाता है। जिसकी जीवन-पतवार परमात्मा के हाथों में हो, उसे किसका भय ? सर्वशक्तिमान से सम्बन्ध स्थापित करके ही मनुष्य निर्भय हो जाता है, उसके स्पर्श से ही मनुष्य में अजेय बल आ जाता है। व्यक्तित्व में सद्गुणों का प्रकाश और दिव्यता झरने लगती है। जीवन में आनन्द झलकने लगता है। यह सम्बन्ध और स्पर्श जब तक कि पूर्णता प्राप्ति नहीं होती, तब तक श्रद्धा के रूप में प्रकट और विकसित होता है। वह एक प्रकार से पाथेय है, इसलिए उसका मूल्य और महत्त्व उतना ही है जितना अपने लक्ष्य का, गन्तव्य का, अभीष्ट का, आत्मा, सत्य अथवा परमात्मा की प्राप्ति का।

परमात्मा के प्रति अत्यन्त उदारतापूर्वक आत्म-भावना पैदा होती है, वही श्रद्धा है। सात्विक श्रद्धा की पूर्णता में अन्तःकरण स्वतः पवित्र हो उठता है। श्रद्धायुक्त जीवन की विशेषता से ही मनुष्य-स्वभाव में ऐसी सुन्दरता बढ़ती जाती है जिसको देखकर श्रद्धावान् स्वयं सन्तुष्ट बना रहता है। श्रद्धा सरल हृदय की ऐसी प्रीतियुक्त भावना है जो श्रेष्ठ पथ की सिद्धि कराती है। इसीलिए शास्त्रकार कहते हैं-

भवानीशङ्करौ वन्दे श्रद्धाविश्वासरूपिणौ।
याभ्यां विना न पश्यन्ति सिद्धाः स्वान्तःस्थमीश्वरम्॥
-रामायण, बालकाण्ड

"हम सर्वप्रथम भवानी और भगवान, प्रकृति और परमात्मा को श्रद्धा और विश्वास के रूप में वन्दन करते हैं जिसके बिना सिद्धि और ईश्वर दर्शन की आकांक्षा पूर्ण नहीं होती।"

ज्ञान-भक्ति का निरूपण करते हुए तुलसीदास जी उत्तरकाण्ड में लिखते हैं-

सात्विक श्रद्धा धेनु सुहाई।
जो हरि कृपा हृदय बस आई॥
जप तप व्रत जम नियम अपारा।
जो श्रुति कह शुभ धर्म अधारा॥
तेई तृन हरित धरै जब गाई।
भाव बच्छ सिसु पाइ पेन्हाई॥
एहि विधि लेसै दीप, तेजराशि विज्ञानमय।
जातहि जासु समीप, जरहिं मदादिक सुलभ सब॥

जब तक मनुष्य के अन्तःकरण में श्रद्धारूपी गाय का जन्म नहीं होता तब तक जप, तप, नियम, व्रत आदि जितने भी धर्माचरण हैं उनमें मनुष्य की बुद्धि स्थिर नहीं रहती। यह श्रद्धा ही जीवन की कठिनाइयों से मनुष्य को पार लगाती है और आत्म-गुणों का विकास करती हुई उसे विज्ञानयुक्त परमात्मा के प्रकाश तक जा पहुँचाती है।

श्रद्धा का आविर्भाव सरलता और पवित्रता के संयोग से होता है। पार्थिव वस्तुओं से ऊपर उठने के लिए सरलता और पवित्रता इन्हीं दो गुणों की अत्यन्त आवश्यकता होती है। इच्छा में सरलता और प्रेम में पवित्रता का विकास जितना अधिक होगा उतनी ही अधिक श्रद्धा बलवान होगी। सरलता द्वारा परमात्मा की भावानुभूति होती है और पवित्र प्रेम के माध्यम से उसकी रसानुभूति। श्रद्धा दोनों का सम्मिलित स्वरूप है। उसमें भावना भी है रस भी। जहाँ उसका उदय हो वहाँ लक्ष्य प्राप्ति की कठिनाई का अधिकांश समाधान तुरन्त हो जाता है। अविश्वस्त व्यक्तियों के आगे थोड़ा-सा भी काम आ जाता है तो उससे उन्हें बड़ी हड़बड़ाहट होती है, किन्तु यदि उसी काम को साहस और भावना के साथ हाथ में लिया जाता है तो घबराहट और कठिनता भी आनन्द में बदल जाती है। जो बोझ का काम प्रतीत होता था वही सरलता से प्राप्त कर लेने योग्य बन जाता है।

प्राचीन काल में पवित्र अन्तःकरण वाले महान पुरुषों द्वारा अज्ञान अन्धकार में भटकते हुए लोक-जीवन को सत्य मार्ग पर अग्रसर करने का माध्यम उनके द्वारा जगाई हुई श्रद्धा से ही होता रहा है। शिष्यों को श्रद्धा का पूर्ण पाठ तथा साधना की स्थिरता के लिए तप भी आवश्यक था, युग और परिस्थितियाँ बदल जाने पर आज भी आवश्यक है। परमात्मा सत्य है उसके गुण और स्वभाव अपरिवर्तनशील हैं इसी तरह वहाँ तक पहुँचने का मार्ग और माध्यम भी अपरिवर्तित ही है। उसे आज भी पाया और अनुभव किया जा सकता है, पर उस स्थिति की परिपक्वता के बीच में जो साधनाएँ, परिवर्तन, हलचल, कठिनाइयाँ और दुरभिसन्धियाँ आती हैं उनके लक्ष्य प्राप्ति की भावना की स्थिरता के लिए श्रद्धा आवश्यक है।

श्रद्धा तप है। वह ईश्वरीय आदेशों पर निरन्तर चलते रहने की प्रेरणा देती है। आलस्य से बचाती है। कर्तव्य-पालन में प्रमाद से बचाती है। सेवा-धर्म सिखाती है। अन्तरात्मा को प्रफुल्ल, प्रसन्न रखती है। इस प्रकार के तप और त्याग से श्रद्धावान व्यक्ति के हृदय में पवित्रता एवं शक्ति का भण्डार अपने आप भरता चला जाता है। गुरु कुछ भी न दे तो भी श्रद्धा में वह शक्ति है जो अनन्त आकाश से अपनी सफलता में तत्व और साधन को आश्चर्यजनक रूप में खींच लेती है। ध्रुव, एकलव्य, अज, दिलीप की साधनाओं में सफलता का रहस्य उनके अन्तःकरण की श्रद्धा ही रही है। उनके गुरुओं ने तो केवल उसकी परख की थी। यदि इस तरह की श्रद्धा आज भी लोगों में आ जाये और लोग पूर्ण रूप से परमात्मा की इच्छाओं पर चलने को कटिबद्ध हो जायें तो विश्वशान्ति, चिर-सन्तोष और अनन्त समृद्धि की परिस्थितियाँ बनते देर न लगे। उसके द्वारा सत्य का उदय, प्राकट्य और प्राप्ति तो अवश्यम्भावी हो जाता है। इसी बात को शास्त्रों में संक्षेप में इस प्रकार कहा गया है-

श्रद्धावान् लभते ज्ञानं तत्परः संयतेन्द्रियः।
ज्ञानं लब्ध्वा परां शान्तिमचिरेणाधिगच्छति॥
-गीता

"जितेन्द्रिय तथा श्रद्धावान् पुरुषों को ही ज्ञान मिलता है और ज्ञान से ही परमात्मा की प्राप्ति होती है। सत्य समुपलब्ध होता है।"

गायत्री उपासना मानवीय अंतःकरण के शोधन और परिमार्जन की साधना है

वातावरण में छाई विषाक्तता से बचाव और उसके शमन हेतु हर व्यक्ति के लिए जरूरी हो गई है यह युगसाधना

ऊँची और टिकाऊ इमारतें मजबूत बुनियाद पर ही बनाई जा सकती हैं। उसी प्रकार महान व्यक्तियों के जीवन पर दृष्टि डालें तो पता चलता है कि उनका जीवन सद्गुण, संस्कार, सद्भाव की मजबूत बुनियाद पर ही उत्कृष्टता के शिखर चूम सका था। जीवन में देवत्व के जागरण के इन बीजों को सतत पोषण देकर ही कोई महान बन पाता है।

अच्छा और सच्चा इंसान बनने की चाह किसे नहीं होती? चाहते सभी हैं, लेकिन कमी यही रह जाती है कि जिस बुनियाद पर यह उत्कृष्टता प्राप्त की जा सकती है, दुनिया के प्रवाह और चकाचौंध में या तो उसका पता ही नहीं होता या जाने-अनजाने उसकी उपेक्षा हो जाती है। लोग उत्कृष्टता के राजपथ पर चलने की अपेक्षा शॉर्टकट अपनाते, भटकते और समस्याओं के दलदल में फँसते देखे जाते हैं।

नवरात्र के संदर्भ में

वर्ष के दोनों नवरात्रों को आत्मिक उत्थान की साधना के लिए अत्यंत अनुकूल समय माना जाता है। इन दिनों प्रायः हर आस्तिक पूजा-पाठ, अनुष्ठान करते हैं। सबके कल्याण और सामाजिक उत्थान के भाव से भी लोगों द्वारा व्यक्तिगत और सामूहिक पूजा-अनुष्ठान किए जाते हैं, लेकिन देखा गया है कि अधिकांश लोगों के इस आध्यात्मिक पुरुषार्थ के साथ व्यक्तिगत जीवन की मनोकामनाओं की पूर्ति की आकांक्षा ही प्रमुखता से जुड़ी होती है।

पूजा-पाठ, प्रार्थना, अनुष्ठान का प्रभाव होता है, लेकिन उसका विज्ञान और विधान समझ कर उचित भाव के साथ सही कर्मकाण्ड का चयन किया जाए तो वह कई गुना प्रभावशाली हो जाता है। लोग अपनी आस्थाओं के अनुरूप ही उपासना-साधना करते हैं। नवरात्र को शक्ति उपासना का पर्व माना जाता है, इसलिए दुर्गा सप्तशती के पाठ को प्रधानता दी जाती है। यह पर्व भगवान राम के जन्मोत्सव से भी जुड़ा है, अतः रामचरित मानस पाठ, सुन्दरकाण्ड पाठ जैसे अनुष्ठान भी भक्तगण करते हैं। देश के अलग-अलग भागों के लोग अपनी-अपनी आस्थाओं के अनुरूप पूजा-उपासना का विधान अपनाते हैं।

मनुष्य की सही पहचान है उसकी मानवता। आस्तिकता मानवता की जननी है, जो जीवन की एक प्रबल आवश्यकता है। यदि व्यक्ति की आस्था समय की माँग, समस्याओं के समाधान और जीवन की आवश्यकताओं को पूरा करने वाले आदर्शों के प्रति समर्पित हो तो कमाल हो जाए। तब पूजा, उपासना, अनुष्ठान कई गुना बेहतर फलदायी हो सकते हैं।

अध्यात्म का मूलभूत प्रयोजन मन, विचारों का परिष्कार कर आत्मसत्ता को बल प्रदान करना है, लेकिन विवेक के अभाव में लोग मनोकामना पूर्ति को ही आध्यात्मिक क्रियाओं का मूल प्रयोजन मान बैठते प्रतीत होते हैं। वे यह भूल गए हैं कि लौकिक हो या पारलौकिक, प्रत्येक सफलता और सिद्धि में आत्मबल की अहम भूमिका होती है। इसलिए प्राथमिकता आत्मबल संचय को ही दी जानी चाहिए।

आज व्यक्तिगत, पारिवारिक और सामाजिक जीवन में मनुष्य चारों तरफ से समस्याओं से घिरा हुआ है। भौतिकवादी जीवन के मकड़जाल में वह इस तरह उलझ गया है कि शरीर से आगे बढ़कर आत्मा की अनुभूति तो दूर, उसकी कल्पना तक कर पाना संभव नहीं हो रहा। यही कारण है कि पूजा-पाठ, अनुष्ठान आदि का प्रयोजन भी इन उलझनों से निकलने तक ही सीमित हो जाता है। मन में देवत्व के प्रति आस्था ही नहीं जग पाई तो मानव में देवत्व का उदय होगा भी कैसे?

वर्तमान जीवन की विसंगतियाँ

आज समाज में जितनी भी विसंगतियाँ दिखाई देती हैं, यदि उनकी जड़ तलाशी जाए तो मनुष्य में देवत्व तो दूर, मानवता का अभाव ही उसका प्रधान कारण दिखाई देगा। इसी कारण मानवीय अंतःकरण और वातावरण में विषाक्तता छाई हुई हैं। यह संकट इतना विकराल हो गया है कि सामूहिक प्रयासों के बिना इनका समाधान होता दिखाई नहीं देता। इन परिस्थितियों में हर व्यक्ति को विवेकपूर्वक सोचने और मानवता को पतन तथा सर्वनाश से बचाने के लिए आगे आने की आवश्यकता है।

मानवीय अंतःकरण और वातावरण का परस्पर गहरा संबंध है। स्थूल की अपेक्षा सूक्ष्म अधिक प्रभावशाली होता है। स्थूल जगत के पर्यावरण की अपेक्षा सूक्ष्म जगत का प्रदूषण मानवीय आस्थाओं को अधिक विषाक्त कर रहा है। जब तक इस विषाक्तता का शमन नहीं होता, स्थूल जगत की विसंगतियों का समाधान असंभव-सा दिखाई देता है।

आज अपना देश भौतिक प्रगति और समृद्धि की दिशा में तेजी से आगे बढ़ रहा है। देश की अर्थ व्यवस्था पाँच ट्रिलियन की होने और दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी अर्थ व्यवस्था बनने का संकल्प सिद्ध होने में देर नहीं है। लेकिन क्या यह समृद्धि और प्रगति हमारे सुखी जीवन का आधार बन पाएगी? दुनिया के सम्पन्न और समृद्ध देशों की ओर नजर उठाकर देखें तो इसमें संदेह ही है।

देश में हिंसा और जातिवाद का जहर निरंतर बढ़ता दिखाई दे रहा है। इसे मनुष्य के मन और विचारों में छाई विषाक्तता का प्रभाव ही कहा जाना चाहिए। आज लड़ाई-झगड़े, हत्या और नारी अपमान का जो नंगा नाच हो रहा है, वह लोगों की अनियंत्रित मनःस्थिति एवं मन पर छाए आवेश का ही परिणाम है। जब तक लोगों के विचार नहीं बदलते, वे सदाचार नहीं अपनाते, तब तक कठोर से कठोर कानून भी इन्हें नियंत्रित कर पाएँगे, ऐसा नहीं लगता।

आज पूरी दुनिया पर युद्धोन्माद छाया हुआ है। शासकों में परस्पर प्रतिस्पर्धा, अहंकार, भय, आवेश, साम्राज्यवादी सोच के कारण आए सर्वनाश के इस संकट का एकमात्र समाधान है कि व्यक्ति में मानवतावादी दृष्टिकोण का विकास हो।

स्वास्थ्य की समस्याएँ नई-नई शोध और बढ़ते चिकित्सा कौशल से ही हल नहीं हो सकतीं। इसके लिए श्रम, संयम, अनुशासन को जीवन में धारण करने की आवश्यकता है। तरह-तरह के नशे के चंगुल में पड़कर अपने जीवन को बर्बाद करने वालों को उनका विवेक ही सही मार्ग दिखा सकता है।

टूटते परिवार और बिखरते समाज का मूल कारण असहिष्णुता, भौतिकवादी सोच, अथाह आकांक्षाएँ, स्वच्छंद जीवन की कामना, नैतिकता एवं संस्कारों का अभाव ही है। स्कूली शिक्षा इनके समाधान में कितना योगदान दे सकेगी, कहा नहीं जा सकता। इसके लिए तो लोगों के स्वभाव और संस्कार बदलने होंगे। जब तक परस्पर प्रेम और विश्वास नहीं बढ़ता, यह समस्या हल नहीं हो सकती।

आज इंटरनेट का क्रान्तिकारी युग है, लेकिन इंटरनेट पर अवांछनीयताओं का इतना विस्फोट हुआ है कि चाहकर भी व्यक्ति पतन की ओर जाने से स्वयं को रोक नहीं पा रहा। आर्थिक लाभ के लिए उपभोक्ताओं को इस तरह से लुभाया जा रहा है कि वह संवेदनशील मनुष्य से हृदयहीन मशीन बनता जा रहा है। कोई आत्मसंयमी और विवेकवान व्यक्ति ही पतन के इस मार्ग पर चलने से इन्कार कर सकता है।

विवेकपूर्वक चुनें अपना साधना पथ

वर्तमान जीवन में समस्याओं का अंबार है, लेकिन सबका समाधान एक ही है, यह कि मानवीय अंतःकरण और वातावरण में छाई विषाक्तता को दूर किया जाए। दोनों एक-दूसरे पर अवलम्बित हैं। सूक्ष्म जगत की विषाक्तता मानवीय अंतःकरण को प्रभावित कर रही है। ऐसी ही विषाक्तता रामायण और महाभारत काल में भी छाई थी, जिसके समाधान के लिए क्रमशः भगवान राम ने अश्वमेध यज्ञ और पाण्डवों ने वाजपेय यज्ञ किए थे। आज युगऋषि परम पूज्य गुरुदेव पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी ने अपनी युग निर्माण योजना के माध्यम से देवत्व को संगठित कर इस विषाक्तता का शमन करने के लिए सामूहिक पुरुषार्थ करने का आह्वान किया है। सूक्ष्म जगत का शोधन होगा तो लोगों के विचार बदलेंगे, उनके व्यवहार में सदाचार बढ़ता जाएगा और सारी समस्याओं का समाधान होता दिखाई देगा।

नवरात्र में साधक का प्रथम प्रयास मानवतावादी जीवन पाने के लिए अंतर्निहित देवत्व के जागरण का होना चाहिए। यदि मानवता है तो नर से नारायण और मानव से महामानव बनने का पथ सरलता से प्रशस्त होता जाता है। मानवता का तात्पर्य जीवन में सत्य, प्रेम, न्याय, दया, संवेदना, परोपकार, सहिष्णुता, सदाचार जैसे सद्गुणों की प्रतिष्ठा से है। जिसका जीवन इन सद्गुणों से सम्पन्न है, उसकी आत्मा में हजार हाथियों का बल होता है। इस अध्यात्म बल के बूते ही महात्मा गाँधी ने अंग्रेजी शासन की चूलें हिला दी थीं। आत्मबल ने ही मंगल पाण्डेय, रानी लक्ष्मीबाई, शिवाजी, महाराणा प्रताप, वीर सावरकर, शहीद भगतसिंह, सरदार पटेल, लालबहादुर शास्त्री जैसे हजारों महापुरुषों को चमत्कारिक व्यक्तित्व प्रदान किया था। जो आत्मबल सम्पन्न है, वह अपना ही नहीं, सैकड़ों-हजारों लोगों का उत्थान करने में समर्थ है।

मानवता की उपेक्षा कर की गई कोई भी साधना के परिणाम हितकारी नहीं होते। अपने मिशन का एक चर्चित उद्घोष है-

धनबल, जनबल, शक्ति अपार, सदाचार बिन सब बेकार।

विवेक के अभाव में बुद्धि तरह-तरह के कुचक्र रचती देखी जाती है, बल दूसरों को पीड़ा पहुँचाने और अहंकार जताने का माध्यम बन जाता है, धन जीवन में तरह-तरह के विकारों को जन्म देता है, सत्ता का उपयोग लोगों के शोषण में होने लगता है। अतः नवरात्र साधना के साधकों से निवेदन है कि वे समय की अनुकूलता का लाभ उठाते हुए युग की माँग के अनुरूप अंतःकरण की शुद्धि और वातावरण के परिष्कार के लिए गायत्री उपासना-अनुष्ठान अवश्य करें। बल्कि हर व्यक्ति को अपनी दैनंदिन की नियमित उपासना के साथ गायत्री मंत्र जप या लेखन तथा बलिवैश्व यज्ञ-दीपयज्ञ आदि का समावेश कर ही लेना चाहिए।

गायत्री उपासना ही क्यों?

गायत्री प्राणों की अधिष्ठात्री है। मानव ही नहीं, जीव-जगत, ब्रह्माण्ड में जो भी चेतनात्मक स्पंदन दिखाई दे रहा है, वह गायत्री ही है। जो सनातन धर्मावलम्बी नहीं हैं, वे इस चेतन तत्त्व को अपनी शब्दावली के अनुरूप नाम देकर उसकी उपासना कर सकते हैं, लेकिन वे यदि गायत्री मंत्र का जप या लेखन कर सकते हैं तो उसका प्रभाव बेहतर होगा, इसकी पुष्टि वैज्ञानिक शोधों से भी हो गई है। जिन्हें इस शब्दावली से परहेज हो, वे इसके भाव-सबके लिए सद्बुद्धि और सबके लिए उज्ज्वल भविष्य का ध्यान और प्रार्थना के साथ अपने इष्ट मंत्र या नाम का जप कर सकते हैं।

प्रायः सभी ऋषि गायत्री उपासक रहे हैं, उन सभी ने गायत्री की महिमा गाई है। गायत्री चारों वेदों का सार है। यह सारे ब्रह्माण्ड को प्रकाशित करने वाली महाशक्ति है। जहाँ प्रकाश है, सात्विकता है, शिवत्व है वहाँ गायत्री ही है। जहाँ गायत्री का अभाव है वहाँ तरह-तरह की विसंगतियाँ हैं, समस्याएँ हैं।

गायत्री को दुनिया का सबसे छोटा धर्म शास्त्र कहा जाता है। गायत्री गुरुमंत्र है। जो गायत्री की उपासना करता है, उसके जीवन में प्रकाश आना अवश्यंभावी है। वेद, पुराण, गीता, रामायण आदि समस्त आर्ष ग्रंथों में गायत्री की अपार महिमा है। कुछ पंक्तियों में उसकी महिमा नहीं बताई जा सकती और न ही यहाँ बताने का प्रयास किया जा रहा है। जिन्हें गायत्री के विषय में विस्तार से जानना हो वे परम पूज्य गुरुदेव पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी द्वारा रचित गायत्री महाविज्ञान अवश्य पढ़ें। यहाँ एक सामान्य मानव के रूप में गायत्री उपासना ही क्यों? यह समझाने का प्रयास किया जा रहा है।

गायत्री अंतःकरण की शुद्धि का सबसे सरल उपाय है। जैसे माँ अपने बच्चे का पालन-पोषण करती है, वैसे ही गायत्री माता हर जीव के प्राणों का पोषण करने वाली है। इसकी साधना का दुष्प्रभाव नहीं होता। हर व्यक्ति गायत्री उपासना कर सकता है। यह मानवता का मंत्र है। जो गायत्री जपता है, उसके अन्य उपासना-अनुष्ठान भी सुफलदायी होते हैं।

यह अनुभूत सत्य है कि गायत्री उपासना से सद्बुद्धि, विवेक और सदाचार बढ़ता है। रामचरित मानस में संत तुलसीदास जी कहते हैं-*जहाँ सुमति तहँ सम्पति नाना, जहाँ कुमति तहँ विपति निदाना।*

सुमति के आते ही समस्याओं का स्वतः निराकरण होता जाता है। गायत्री परिवार में देश के हर क्षेत्र में ऐसे ढेरों उदाहरण मिल जाएँगे, जिसमें लोगों में पहले तरह-तरह की जघन्य बुराइयाँ थीं, गायत्री उपासना के प्रभाव से उनका जीवन सात्विक, सदाचारी, संस्कारवान होता चला गया। यदि घर की महिलाएँ या कोई अन्य सदस्य गायत्री उपासना करता है तो पूरे परिवार पर उसका प्रभाव पड़ता है, बच्चे सुशील और संस्कारवान बनते हैं।

गायत्री मंत्र आज दुनिया में सबसे अधिक जपा जाने वाला मंत्र है। इस सामूहिक साधना के प्रभाव से सूक्ष्म जगत में सकारात्मक ऊर्जा का विशेष चुंबकीय प्रभाव विनिर्मित हुआ है। गायत्री उपासक का संपर्क उस चुंबकीय ऊर्जा के साथ होता है और उसकी अपनी साधना की ऊर्जा के साथ वातावरण में व्याप्त सामूहिक साधना का लाभ भी उसे मिलता है। यह ठीक ऐसा ही है जैसे घर के नल का पानी की किसी बड़ी टंकी से जुड़ जाना।

इन दिनों असुरता सारे विश्व में छाई है। जब तक इस विषाक्तता का शमन नहीं होता, तब तक कोई देश, समाज या परिवार सुख-चैन नहीं पा सकेगा। अतः आज गायत्री उपासना से अंतःकरण को शुद्ध करने और सूक्ष्म जगत में छाई विषाक्तता को दूर करने के लिए सबको मिलकर प्रयास करने की आवश्यकता है।

राष्ट्र की तरुणाई को मानवीय गरिमा और नैतिक उत्तरदायित्वों का बोध कराते आयोजन

युवा चेतना जागृति संवाद 300 युवक-युवतियों को दिया संदेश

मनासा, नीमच। मध्यप्रदेश

जनपद पंचायत मनासा एवं गायत्री परिवार मनासा द्वारा दिनांक 23 फरवरी 2025 को जनपद सभागृह में युवा चेतना जागृति संवाद कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में युवाओं को सामाजिक कुरीतियों को दूर करने के लिए प्रेरित करने, सामाजिक बुराइयों से सजग रहते हुए अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखने एवं मानव जीवन के लक्ष्य को प्राप्त करने संबंधी मार्गदर्शन देने पर केन्द्रित रहा।

गायत्री परिवार मध्यप्रदेश के युवा प्रकोष्ठ के प्रांतीय प्रतिनिधि डॉ. राहुल कुमार सतुना ने शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार और देव संस्कृति विश्वविद्यालय के युवा जागृति अभियान का संदेश दिया। उन्होंने जीवन के इस स्वर्णिम काल का नियोजन करते हुए व्यक्तित्व निर्माण के सूत्रों की चर्चा की। जिला संयोजक श्री गिरिराज चौहान ने गायत्री मंत्र, बुद्धि बढ़ाने की विधि, भारतीय संस्कृति और युवा वर्ग विषयों पर उद्बोधन दिया।

मनासा अनुविभागीय अधिकारी श्री पवन बारिया ने जीवन में सफलता प्राप्त करने के महत्त्वपूर्ण सूत्र बताये। गायत्री परिवार के वरिष्ठ परिजन श्री बंसीलाल कछावा ने सभी को एक अच्छे इंसान, राष्ट्रसेवी बनकर महानता

के पथ पर अग्रसर होने के लिए शुभकामनाएँ प्रदान कीं।

अंतिम सत्र में प्रतिभागियों ने शिविर सम्बन्धी अपने अनुभव और विचार प्रस्तुत किये। युवा जागृति संवाद कार्यक्रम में मनासा, रामपुरा क्षेत्र के लगभग 300 युवाओं ने भागीदारी करते हुए अपने जीवन को गायत्री परिवार की विचारधारा के अनुरूप ढालने का संकल्प लिया। कार्यक्रम का संचालन श्री लालनाथ बारोड ने एवं आभार प्रदर्शन श्री मोहन जी गुर्जर ने किया।

कन्या किशोर कौशल अभिवर्धन कार्यशालाएँ

उपजोन स्तरीय कार्यशाला

पाँच जिलों के प्रशिक्षकों को प्रशिक्षण दिया

सौंसर, पांढुरना। मध्यप्रदेश

गायत्री शक्तिपीठ सौंसर में 9 फरवरी 2025 को उपजोन स्तरीय कन्या किशोर कौशल अभिवर्धन कार्यशाला सम्पन्न हुई। किशोरावस्था में बच्चों के जीवन में आने वाले भटकावों से उन्हें बचाना इस कार्यशाला का प्रमुख उद्देश्य था। जीवन में नैतिक और सांस्कृतिक मूल्यों के विकास करने के महत्त्व को रेखांकित किया गया। नरेंद्र हिंगवे ने प्रशिक्षण को प्रभावशाली बनाने के टिप्स दिए। बच्चों को समाज और राष्ट्र को संगठित एवं सशक्त बनाने के लिए गायत्री परिवार के कार्यक्रमों के साथ जुड़ने की प्रेरणाएँ भी दी गईं।

यह कार्यशाला उप जोन समन्वयक श्री दिनेश देशमुख के नेतृत्व में संपन्न हुई। इसमें पांढुरना, बैतूल, सिवनी, बालाघाट और छिंदवाड़ा के प्रशिक्षकों ने भाग लिया। कन्या, किशोर कौशल विकास अभियान के समन्वयक श्री किशोर किनकर ने कहा कि यदि गायत्री परिवार के प्रत्येक सदस्य निष्ठापूर्वक नई पीढ़ी को मार्गदर्शन देने में प्रतिबद्ध हों, तो इसके सकारात्मक परिणाम जल्द ही दृष्टिगोचर होंगे।

कार्यशाला में पांढुरना जिले से नारायण कालभूत, विश्वेश्वर गांजरे, पुष्पा खंडार; बालाघाट से अमिता चौधरी, पुष्पेश्वर पिछोड़े; सिवनी से अनुराधा चंद्रवंशी, पुष्पलता सोनी; छिंदवाड़ा से अशोक माहौरे, अनिता राउत; बैतूल से कृष्णजी नागले, देवेंद्र साहू, सुमित्रा चिलहाटे, संजय बरोदे; केवलारी से विनोद बर्मन, तमिया से के. एस. ऊईके और बरघाट से हर्षलाल सोनी आदि उपस्थित हुए और अपने-अपने जिलों के प्रतिनिधियों के साथ सक्रिय रूप से योगदान दिया।

आत्मीयता विस्तार एवं जनसंपर्क का लोकप्रिय व प्रभावशाली माध्यम बना पाक्षिक प्रज्ञा अभियान

अखण्ड दीप प्राकट्य एवं परम वंदनीया माताजी के जन्म की शताब्दी की यह मंगलवेला भारत की गौरवशाली संस्कृति को पुनः प्रतिष्ठित करने का सौभाग्यशाली अवसर है। इन दिनों दैवी चेतना का विशिष्ट प्रवाह उमड़ रहा है। परम पूज्य गुरुदेव के विचार और युगशक्ति गायत्री को पूरे विश्व में स्थापित करने में ऐतिहासिक, अविस्मरणीय भूमिका निभा रहे युग नायक, करोड़ों युवाओं के आदर्श आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी की प्रेरणा से प्रज्ञा अभियान के मध्यप्रदेश संस्करण का शुभारंभ हुआ। इस वर्ष वसंत पंचमी की वेला में उभरे इस दैवी संकल्प ने पूरे मध्य प्रदेश में जनजागरण का एक क्रान्तिकारी उत्साह जगाया है।

इन दिनों मध्य प्रदेश के प्रायः हर जिले में पाक्षिक के न्यूनतम 1000 सदस्य बनाने की एक स्वस्थ प्रतिस्पर्धा है। सभी अपने लक्ष्य को शीघ्र से शीघ्र पूरा करने के लिए उत्साहित हैं। परिजन अपने संकल्प, प्रयास और सफलताओं की कहानी व्हॉट्सएप, फेसबुक आदि सोशल मीडिया माध्यमों से साझा कर रहे हैं। प्रज्ञा अभियान के माध्यम से जनसंपर्क, आत्मीयता संवर्धन और नवचेतना जागरण का एक अत्यंत लोकप्रिय और प्रभावशाली अभियान चल पड़ा है। मध्य प्रदेश के प्रायः हर जिले से परिजन अपने वीडियो संदेश भेज रहे हैं, गीत-कविताएँ बनाकर जन-जन में उत्साह जगा रहे हैं।

विगत दो अंकों से मध्यप्रदेश के परिजनों के इस उत्साह की बानगी प्रज्ञा अभियान के पृष्ठ क्रमांक 3 पर दी जाती रही है। कुछ उदाहरण यहाँ भी प्रस्तुत हैं। विस्तृत प्रतिक्रियाएँ और उत्साह प्रज्ञा अभियान के फेसबुक पेज पर देखा जा सकता है। **फेसबुक पेज फॉलो कीजिए, लोगों के अनुभव और उत्साह आपको भी युग चेतना विस्तार के लिए नई ऊर्जा देगा।**

गाँव-गाँव प्रज्ञा अभियान पहुँचाती तेन्दुखेड़ा (नरसिंहपुर) की टोली, इंदौर में यशोदा शर्मा ने अपने पोते के जन्मदिन पर बाँटे प्रज्ञा अभियान, करेली (नरसिंहपुर) में प्राचार्या को पुस्तकालय के लिए प्रज्ञा अभियान भेंट किया तथा तेंदुखेड़ा में भारत गैस एजेंसी ने 100 प्रतियाँ मँगाकर बाँटने का संकल्प लिया

यज्ञ में 1008 पाठक बनाने का संकल्प

रायसेन। मध्यप्रदेश

विगत दिनों रायसेन जिले के मंडीदीप में मिनी अश्वमेध यज्ञ जैसा विराट कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। इस कार्यक्रम में श्री धीरजमनी जी और उनकी पूरी टीम ने जिले में प्रज्ञा अभियान के 1008 पाठक बनाने का संकल्प लिया है। टीम का मानना है कि प्रज्ञा अभियान के माध्यम से अपना जनसंपर्क बढ़ाकर हम अपने समाज को जागरूक कर सकते हैं, उसमें सकारात्मक बदलाव ला सकते हैं।

जिले में नया जोश, नई क्रान्ति

तेंदुखेड़ा, नरसिंहपुर। मध्यप्रदेश

पाक्षिक के मध्यप्रदेश संस्करण का स्वागत करते हुए तेंदुखेड़ा के श्री संतोष कुमार नेता जी अपने जनसंपर्क अभियान को निरंतर बढ़ाते जा रहे हैं। वे व्यक्तिगत स्तर पर अब तक 250 पाठक बना चुके हैं। तेंदूखेड़ा शाखा के साझा प्रयासों से प्रज्ञा अभियान की सदस्यता का वृहद अभियान चलाया गया, जिसके अंतर्गत प्रथम प्रयास में ही 13 गाँवों में पाक्षिक के 25-25 सदस्य बना लिये गए।

करेली, नरसिंहपुर में श्री राजनारायण कौरव जी ने मध्यप्रदेश संस्करण की प्रथम प्रति पी.एम. श्री शासकीय कन्या उच्चतर मा. वि. करेली के पुस्तकालय हेतु प्राचार्या श्रीमती श्रद्धा श्रीवास्तव को भेंट की।

तेंदुखेड़ा के श्री रामकुमार ठाकुर, भारत गैस एजेंसी प्रज्ञा अभियान मध्यप्रदेश की विषयवस्तु से बहुत प्रभावित हुए। वे अपनी ओर से प्रज्ञा अभियान की सौ प्रतियाँ मँगाकर बाँट रहे हैं।

मानकपुर-बिजौरा, नरसिंहपुर। मध्यप्रदेश

प्रज्ञा अभियान का मध्यप्रदेश संस्करण प्रकाशित होने से उत्साहित ग्राम मानकपुर बिजौरा के परिजन भोजराज बड़कुर, शंकर पटेल और वृंदावन पटेल ने सन् 1984 से मिशन की सेवा कर रहे 90 वर्षीय श्री खूबचंद प्रजापति जी को प्रज्ञा अभियान पाक्षिक की सदस्यता प्रदान कर सम्मानित किया।

पोते के संस्कार में पाक्षिक वितरण

इंदौर। मध्यप्रदेश

बीजेपी प्रदेश कार्यकारिणी सदस्य श्रीमती यशोदा शर्मा ने अपने पोते का जन्मदिन गायत्री दीप यज्ञ के साथ मनाया। इस अवसर पर लोगों को प्रसाद के साथ प्रज्ञा अभियान की प्रतियाँ प्रदान करते हुए आग्रह किया गया कि परम पूज्य गुरुदेव एवं परम वंदनीया माताजी की चेतना से जुड़कर उनसे सतत प्रेरणा और आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए सभी युग साहित्य का स्वाध्याय अवश्य करें।

भूमिपूजन समारोह में बाँटे प्रज्ञा अभियान

भंडारा (महाराष्ट्र) जिले के मचारना ग्राम में आयोजित हो रहे 51 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ के भूमि पूजन समारोह में लोगों को मिशन का परिचय देने के लिए प्रज्ञा अभियान की प्रतियाँ वितरित की गईं।

भण्डारा में भूमिपूजन समारोह

विवाह की वर्षगाँठ पर 100 पाक्षिक की सदस्यता ली : सुंदरबनी, जम्मू के श्री गोपाल शर्मा जी ने अपनी विवाह की वर्षगाँठ (7 मार्च 2025) मनाते हुए पूज्य गुरुदेव के विचारों को जन-जन तक पहुँचाने के लिए प्रज्ञा अभियान के 100 अंकों की सदस्यता ली। वे इन्हें वर्षभर वितरित करेंगे। उनका प्रयास है कि उनके विवाह की वर्षगाँठ पर शुभकामना देने वाला प्रत्येक परिजन प्रज्ञा अभियान के माध्यम से मिशन के साथ निरंतर जुड़ा रहे।

गायत्री परिवार के कविमना परिजन प्रज्ञा अभियान के सम्मान में कुछ ऐसे गीत गा रहे हैं।

जाग उठा इंसान है

विचार क्रांति की ज्योत जली, जाग उठा इंसान है ।
देता है संदेश हमको, ये प्रज्ञा अभियान है ।।
मानव में देवत्व जगेगा, स्वर्ग धरा पर आयेगा।
होगा उदय सुख-सूर्य का, अज्ञान तम हट जायेगा।।
हो रहे यज्ञ अब घर-घर में, जिनका लक्ष्य महान है।
देता है संदेश हमको, ये प्रज्ञा अभियान है।।

तुकाराम किनकर 'किंकर', पांढुरना

मुक्त करे आज्ञान से

यह प्रज्ञा अभियान अति पावन, मुक्त करे आज्ञान से।
बिना ज्ञान के जप, तप, पूजा, करती है कल्याण नहीं,
प्रज्ञा अभियान पढ़ो मन से, यह जीवन बीते शान से,
यदि मन में अभिमान रहा तो जीवन भर पछताओगे,
जुड़ो और जोड़ो सबको इस प्रज्ञा अभियान से,
यह प्रज्ञा अभियान अति पावन, मुक्त करे आज्ञान से।

पुष्पलता गुप्ता, शहडोल

प्रेमभाव सम्पर्क माध्यम पाक्षिक मानो

मानो समाचार नहीं यह प्रज्ञा अभियान।
सप्त क्रांतियों के लिए, प्रेरक नैतिक ज्ञान।।
प्रेरक नैतिक ज्ञान, कर्तव्य हमें सिखाता।
बदला जग माहौल, परिजन तक पहुँचाता।।
कह सुमित्र कवि राय, गुरु संदेश ही जानो।
प्रेम भाव सम्पर्क माध्यम पाक्षिक मानो।।

राजेश कौरव 'सुमित्र', नरसिंहपुर

सोशल मीडिया में परिजनों द्वारा प्रज्ञा अभियान से जुड़े, संकल्प, प्रतिक्रिया और सफलताओं के ढेरों पोस्ट परिजनों द्वारा किये जा रहे हैं। **फेसबुक पेज फॉलो कीजिए, लोगों के अनुभव और उत्साह आपको भी युग चेतना विस्तार के लिए नई ऊर्जा देंगे।**

https://facebook.com/pragyaabhiyan.official

अब आप 01334-311001 पर फोन कर शान्तिकुञ्ज की नई स्वचालित फोन व्यवस्था (आईवीआर) से शान्तिकुञ्ज के विभिन्न विभागों से सीधा सम्पर्क कर सकते हैं।

सेवा और संस्कारों के भाव से भरापूरा है हमारा गायत्री परिवार

युगऋषि की सत्प्रेरणाओं के संग हुआ 78 जोड़ों का विवाह

मुख्यमंत्री कन्यादान विवाह समारोह

उज्जैन। मध्यप्रदेश : वसंत पंचमी के दिन उज्जैन में मुख्यमंत्री कन्यादान योजना के अंतर्गत नगर निगम द्वारा 78 जोड़ों का सामूहिक विवाह सम्मेलन आयोजित किया गया। इस आयोजन का संचालन गायत्री शक्तिपीठ के पुरोहितों और उपाचार्यों की 40 सदस्यों की टोली ने किया। उन्होंने वैवाहिक कर्मकाण्ड के साथ नवदम्पतियों को परम पूज्य गुरुदेव द्वारा बताई आदर्श दाम्पत्य जीवन के सूत्र समझाये। सभी को सफल-सुखी दाम्पत्य जीवन के लिए नियमित गायत्री उपासना-साधना तथा परम पूज्य गुरुदेव के साहित्य का स्वाध्याय करने की प्रेरणा दी।

सभी विवाह वेदियों पर देवस्थापना चित्र स्थापित किये गए थे। विदाई के समय सभी जोड़ों को सद्साहित्य भेंट किया गया।

पाटीदार समाज में : इसी प्रकार का सामूहिक विवाह संस्कार पाटीदार समाज द्वारा भी आयोजित किया गया था, जिसमें 38 जोड़ों ने युगऋषि की आदर्श सत्प्रेरणाओं को हृदयंगम करते हुए गृहस्थ जीवन में प्रवेश किया।

विवाह संस्कार सम्पन्न कराती गायत्री शक्तिपीठ उज्जैन के पुरोहितों की टोली

गायत्री परिवार ने महाकुंभ प्रयागराज में आने-जाने वाले तीर्थयात्रियों के लिए भोजन प्रसाद वितरण की सेवा की

रीवा। मध्यप्रदेश : 12 फरवरी 2025, पूर्णिमा के अवसर पर 'महाकुंभ प्रयागराज' में कल्पवास और माघ माह का समापन हुआ। इसके चलते प्रयागराज में महाकुंभ स्नान के बाद लाखों श्रद्धालु अपने गंतव्य की ओर लौट रहे थे। अखिल विश्व गायत्री परिवार रीवा ने *''तुलसी पंछिन के पिए घटे न सरिता नीर। धर्म करे धन न घंटे, जो सहाय रघुवीर।।''* के भाव के साथ उन तीर्थयात्रियों की सेवा में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया।

गायत्री परिवार ने प्रयागराज से लौट रहे तीर्थयात्रियों के लिए भोजन, पानी और स्वास्थ्य सेवाओं की व्यवस्था की थी। जिला समन्वयक श्री रवीन्द्र सिंह ने बताया कि सेवाकार्यों में 'अतिथि देवो भव' का भाव रहा। श्री राजेश कुमार शर्मा राजन संयोजक युवा प्रकोष्ठ रीवा, के नेतृत्व में होल्ड पॉइंट जोगिनहाई (रायपुर कर्चुलियान) टोल प्लाजा पर तीर्थयात्रियों को निःशुल्क भोजन, पेयजल, दवाइयाँ और विश्राम की सुविधा प्रदान की गई। इन सेवाओं ने यात्रियों के चेहरों पर मुस्कान और दिलों में आनंद की अनुभूति कराई।

इस विशेष सेवा कार्य में सर्वश्री एस.पी. मिश्रा, प्रमोद सिंह, एस.पी. निगम, अभिमन्यु सिंह, हेमराज शर्मा, गायत्री परिवार की बहिनें और समस्त सदस्य तन-मन-धन से जुड़े रहे। श्री सत्यनारायण चतुर्वेदी (पूर्व विधान सभा सचिव, भोपाल), श्री विनय मूर्ति शर्मा (तहसीलदार रायपुर करचुलियान) और श्री राजेंद्र शुक्ला (प्राचार्य, गायत्री विद्या मंदिर) का अनुकरणीय सहयोग प्राप्त हुआ।

गायत्री परिवार रीवा ने इस महाकुंभ के माध्यम से सेवा के साथ-साथ आगे भी इसी तरह के कार्यों को करने का संकल्प लिया।

तीर्थयात्रियों की सेवा में जुटे गायत्री परिवार के परिजन

प्रेरक पहल

मरणोत्तर संस्कार में अपनाई प्रगतिशील परंपरा

ग्राम पार्टी, मंदसौर। मध्यप्रदेश

गायत्री परिवार के अत्यंत निष्ठावान कार्यकर्त्ता श्री सूरज सिंह चौहान का निधन हो गया। उनके सुपुत्र डॉ. शंभू सिंह चौहान (उपाध्यक्ष, सोधिया राजपूत समाज, मध्यप्रदेश) एवं उनके भाई डॉ. गोविंद सिंह चौहान ने स्व. श्री सूरज सिंह जी की गुरुनिष्ठा का सम्मान करते हुए अपने समाज में प्रेरक पहल की। पगड़ी की रस्म में आए अतिथियों को सादा भोजन ही कराया गया, मृत्युभोज में मिठाई परोसने की चली आ रही परंपरा से परहेज किया गया। डॉ. शंभू सिंह ने अपने दिवंगत पिता की स्मृति में गायत्री शक्तिपीठ को स्मृति दान अर्पित किया। स्व. श्री सूरज सिंह जी की अंत्येष्टि एवं तर्पण संस्कार भी गायत्री परिवार की आदर्श परम्पराओं से ही सम्पन्न कराए गए।

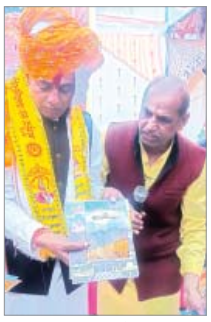

डॉ. शुंभु सिंह को सम्मानित करते श्री मोहनलाल जोशी

मृतक भोज नहीं, सादा भोजन

समाज के प्रति इस सकारात्मक बदलाव को अपनाने के लिए गायत्री परिवार ने डॉ. शंभू सिंह चौहान का आभार व्यक्त करते हुए उन्हें गुरुदेव का साहित्य एवं गायत्री मंत्र पट्टी भेंट कर सम्मानित किया।

श्रद्धा-समर्पण

सामूहिक श्रमदान से हुआ यज्ञशाला का निर्माण

प्रतिकूल परिस्थितियों ने बढ़ाई आस्था, कार्यकर्त्ताओं ने गायत्री महामंत्र की दीक्षा ली

ओंकारेश्वर, बड़वानी। मध्यप्रदेश

गायत्री शक्तिपीठ ओंकारेश्वर में, जहाँ के मुख्य मार्ग की सकरी गली में ट्रैक्टर ट्रॉली जैसे बड़े वाहन प्रवेश नहीं कर सकते थे, वहाँ बड़वानी और खरगोन जिले के 185 भाई-बहिनों ने सामूहिक श्रमदान कर द्वितीय मंजिल पर यज्ञ शाला के निर्माण का कार्य बड़ी श्रद्धा और निष्ठा के साथ सम्पन्न किया।

कार्य सरल नहीं था, मलबे को हटाना और लम्बे नर्मदा सेतु के दूसरे छोर से रेत, गिट्टी, ईंट और सीमेंट लाने में कई बाधाएँ थीं। तीर्थयात्रियों के आवागमन में बाधा न हो, इसलिए यह कार्य रात के समय, जब यात्रियों का आवागमन बंद हो जाये, तभी संभव था। शक्तिपीठ की ऊँचाई भी कम न थी। इन सब विपरीत परिस्थितियों के बावजूद निमाड़ क्षेत्र के प्रज्ञा पुत्रों ने श्रमदान के माध्यम से विशाल भवन खड़ा किया।

श्रमदान में विशेष रूप से साली टांडा शक्तिपीठ, धावड़ी, झिरी जामली, वरला और अन्य ग्रामीण अंचल के आदिवासी भाई-बहिन जुटे और मानव शृंखला बनाकर बड़े-बड़े कार्य सम्पन्न किए। इस श्रमदान से न केवल यज्ञशाला के निर्माण कार्य को गति मिली, बल्कि

श्रमदान में जुटे भाई-बहिनों की की गुरुदेव के प्रति श्रद्धा भी बढ़ी। कई लोगों ने गायत्री मंत्र की दीक्षा लेकर नियमित गायत्री उपासना, साधना करने तथा जीवन की बुराइयों को छोड़ने के संकल्प लिए।

पर्यावरण संरक्षण के लिए अटूट संकल्प, अद्भुत समर्पण

रोप दिए 15 हजार से ज्यादा पौधे। पेड़ बनने तक करेंगे देखभाल

बारां। राजस्थान

गायत्री परिवार की युवा शाखा दिव्य भारत युवा संघ (दिया) ने पर्यावरण संरक्षण के प्रति अपने समर्पण, सतत श्रम और मिशनरी आदर्शों के प्रति निष्ठा से पूरे जिले और आसपास के क्षेत्र को प्रभावित किया है। पर्यावरण संरक्षण के लिए उनके द्वारा चलाया जा रहा 'पंचवटी पौधारोपण अभियान' चर्चा का विषय बना हुआ है। कोरोनाकाल की भीषण त्रासदी के बीच 5 जुलाई 2020 से आरंभ किए गए इस अभियान के अंतर्गत अब तक 15 हजार से अधिक पौधे रोपे जा चुके हैं।

दिया के सदस्य अपने पंचवटी पौधारोपण अभियान के अंतर्गत प्रत्येक रविवार को पौधारोपण और लगाए गए पौधों की देखभाल के लिए सामूहिक श्रमदान करते हैं। उनके द्वारा खेल मैदान के किनारे, पार्क, तालाब की पाल, वन भूमि व मुक्तिधाम सहित खाली स्थानों में पौधे लगाए गए हैं। लगाए गए पौधों की सिंचाई, ट्री गार्ड, बाड़ व तार

सड़कों के किनारे वृक्षारोपण करते दिया के सदस्य

फेंसिंग का काम भी उनके द्वारा लगातार किया जाता है।

दिया की प्रतिबद्धता लगाए गए पौधों के विकसित होने तक उनकी देखभाल करने की है। कोई पौधा सूखता है, तो उसकी जगह नया पौधा रोप दिया जाता है। लगाए गए पौधों में से कई तो पेड़ भी बन चुके हैं। इन पर अब पक्षियों का भी बसेरा हो गया है। आसपास का वातावरण भी हरा-भरा हो चुका है।

गायत्री परिवार यूथ ग्रुप कोलकाता ने पौने दो लाख वृक्षों की पौध लगाई

कोलकाता। पश्चिम बंगाल

सन् 2011 से ही एकनिष्ठ संकल्प के साथ पर्यावरण संरक्षण के अभियान में जुटे गायत्री परिवार यूथ ग्रुप कोलकाता शाखा ने लगभग पौने दो लाख पेड़ लगाए हैं। यह शाखा विगत 748 रविवारों से हर सप्ताह वृक्षारोपण करती है। इस अभियान ने सैकड़ों युवाओं को उनकी सामाजिक जिम्मेदारियों के प्रति जागरूक किया है।

श्री रवि शर्मा के मार्गदर्शन में चल रहे इस वृक्षारोपण कार्यक्रम में 23 फरवरी को कुल 31 वृक्षों की पौध लगाई गई। स्व. श्याम कुमारी देवी की स्मृति में 11 पेड़ लगाए गए। सिंदरी, जिला धनबाद (झारखण्ड) के स्व. शंकर गोराई की स्मृति में पाँच पेड़ लगाए गए। न्यूज़ीलैण्ड

निवासी आर्यन नेगी और आरिस नेगी ने अपने जन्मदिन के उपलक्ष्य में वृक्षारोपण किया।

अमृत महाकुम्भ

सार्थक यात्रा, उद्देश्यपूर्ण स्नान

प्रयागराज। उत्तरप्रदेश

सद्ज्ञान ही वह अमृत है, जिसका पान कर जीवन का सौभाग्य जगाया जाता है। हमारी सनातन संस्कृति में महाकुम्भ मेलों में ऋषि, मुनि, साधु-संतों द्वारा इसी ज्ञान-अमृत के वितरण की महान परम्परा रही है। हाल ही में सम्पन्न प्रयागराज महाकुम्भ में यही परम्परा दोहराई गई। लीक से हटकर कुछ ऐसे भी प्रयोग हुए, जो तीर्थयात्रा की सार्थकता सिद्ध करते हैं, उसे उद्देश्यपूर्ण बनाते हैं।

प्रसंग गाजियाबाद से 700 किलोमीटर की साइकिल यात्रा करते हुए प्रयागराज में कुम्भ स्नान करने आए होम्योपैथी चिकित्सक डॉ. उमेश चंद्र पंत और उनकी 19 वर्षीया बेटी उमंग का है। बेटी और स्वयं गंभीर बीमारी से जूझने वाले उमेश कहते हैं कि साइकिल ने हमें और परिवार को नया जीवन दिया है। साइकिल चलाकर कोई भी निरोगी काया प्राप्त कर सकता है। मैं प्रतिदिन 20 किलोमीटर साइकिल चलाता हूँ और उसमें साथ देती है बेटी, पत्नी सरोज पंत व छोटी बेटी शक्ति पंत भी इसमें खूब सपोर्ट करती हैं।

डॉ. पंत और बीएससी योग की छात्रा, उनकी बेटी उमंग ने गाजियाबाद से प्रयागराज तक के मार्ग में और महाकुंभ क्षेत्र के 37 मार्गों पर साइकिल चलाते हुए यह संदेश दिया।

दे.सं. विश्वविद्यालय का गौरव

19 वर्षीया बिटिया उमंग पंत इन दिनों देव संस्कृति विश्वविद्यालय, शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार में बी.एसी. योग विज्ञान में द्वितीय सेमेस्टर की छात्रा है, जो सदैव अपने व्यक्तित्व से समाज को सकारात्मक दिशा देने के लिए प्रयत्नशील रहती है।

संदेश

- अपने घर पर साइकिल जरूर रखें, यह एक औषधि है।
- बाइक-कार का प्रयोग कम कर पर्यावरण को सुरक्षित करने में मदद करें।
- सब्जी, दूध, राशन आदि लाने जैसे अधिकांश कार्यों के लिए साइकिल का ही उपयोग करें।

दाम्पत्य जीवन चित्त की शान्ति का एक प्रधान साधन है। - प्रेमचंद

सबके लिए सद्बुद्धि, सबके लिए उज्ज्वल भविष्य का भाव जगातीं, सामाजिक एकता-समरसता बढ़ातीं ज्योति कलश यात्राएँ

अलवर, राजस्थान में ज्योति कलश यात्रा के स्वागत, पूजन के लिए आए श्रद्धालु

अलवर। राजस्थान

अलवर नगर में 19 फरवरी को गायत्री शक्तिपीठ से अखंड ज्योति कलश रथ को भावभरे पूजन के साथ नगर भ्रमण के लिए रवाना किया गया। यह रथ नगर के अधिकांश मोहल्लों में पहुँचा। रथ के साथ बड़ी संख्या में श्रद्धालु चले। हर मोहल्ले में सैकड़ों श्रद्धालुओं ने दर्शन, पूजन, आरती के साथ ज्योति कलश का भावभरा स्वागत किया। गायत्री परिवार के वरिष्ठ परिजन श्री मुरारी लाल शर्मा जी ने भव्य दीप यज्ञ कराया, जिसमें सैकड़ों श्रद्धालुओं ने भावनात्मक आहुतियाँ समर्पित कीं। सभी मंदिरों में आरती की गई। वेंकटेश्वर मंदिर में स्वामी सुदर्शनाचार्य ने आरती उतारी। राम मंदिर में डॉ. स्नेह वर्मा (सुनील नर्सिंग होम) ने दीप यज्ञ में भाग लिया और ज्योति कलश की आरती उतारी।

दौसा। राजस्थान

9 फरवरी को भंडाना ग्राम से ज्योति कलश यात्रा ने दौसा जिले में प्रवेश किया। आध्यात्मिक जागरूकता और सामाजिक उत्थान के उद्देश्य से की गई इस ज्योति कलश यात्रा को लेकर दौसा के ग्रामीणों से उत्साहजनक प्रतिक्रिया मिली है।

यह यात्रा बिशनपुरा, काबलेश्वर, पिलवा, तीतरवाड़ा, बड़ोली, सिंडोली, कुंडल, कालोता, मांगाभाटा, प्रेमपुरा, खान भांकरी, भांकरी, काली पहाड़ी, महेश्वरा कलाँ, महेश्वरा खुर्द, जसोता होते हुए गायत्री शक्तिपीठ दौसा पहुँची। ग्रामीणों ने यात्रा का गर्मजोशी से स्वागत किया, आरती उतारी और पुष्प वर्षा की। रमेश शर्मा, रमेश लाटा, कैलाश शर्मा, लक्ष्मी नारायण जांगिड़, डॉ. मदन सैनी, विजेंद्र सिंह, केदार गर्ग आदि की सक्रिय भागीदारी रही।

दीपयज्ञ के साथ विशाल जनसभा का आयोजन हुआ

राजसमंद। राजस्थान

राजसमंद नगर क्षेत्र में ज्योति कलश यात्रा का पूरे नगर में भव्य स्वागत हुआ। बजरंग चौराहे से ज्योति कलश यात्रा ने प्रवेश किया। पुराने कलेक्ट्रेट परिसर में पहुँचने पर यह यात्रा धर्म सभा में परिवर्तित हो गई। पंचायत समिति राजसमंद के प्रधान अरविंद सिंह राठौड़ सहित नगर के अनेक पुरोधाओं ने गायत्री परिवार के प्रयासों से जाग्रत् होती धर्म चेतना का हार्दिक स्वागत किया। गायत्री शक्तिपीठ के मुख्य प्रबंध ट्रस्टी भंवरलाल पालीवाल ने समस्त अतिथियों के सहयोग एवं समर्थन के लिए उन्हें सम्मानित किया। श्री घनश्याम पालीवाल ने अखण्ड ज्योति एवं परम वंदनीया माताजी के जन्मशताब्दी वर्ष में गायत्री परिवार की योजनाओं की जानकारी दी। इस अवसर पर 2400 दीप जलाकर विशाल दीप यज्ञ का आयोजन किया, जिसका संचालन हिमांशु पालीवाल एवं गौरव पालीवाल ने किया।

उपनगर धोइंदा में ज्योति कलश रथ यात्रा का ढोल नगाड़ों से स्वागत अभिनंदन किया गया। इस अवसर पर वासंती पोषाक और ध्वज के साथ नवयुवक नाचते गाते चल रहे थे। 'हम बदलेंगे युग बदलेगा' के नारों ने वातावरण को ऊर्जावान बना दिया। छोटा चारभुजा मंदिर पहुँचने पर धर्म प्राण बंधु-बहिनों ने ज्योति कलश का पूजन किया, आरती उतारी। जहाँ से भी यह यात्रा गुजरी, नगरवासी पुष्पवर्षा कर स्वागत करते दिखाई दिये।

नैनीताल। उत्तराखण्ड

नैनीताल जिले में 692 गांवों में रथ पहुँचा। स्थानीय गायत्री परिवार के सदस्यों और स्थानीय लोगों ने दिव्य ज्योति कलश रथ यात्रा का स्वागत और पूजन किया। इस यात्रा में 76 दीपयज्ञ, 76 यज्ञ के कार्यक्रम सम्पन्न हुए। 8420 गणमान्य लोगों से संपर्क हुआ, 4602 देवस्थापनाएँ हुईं। 11 महिला मंडल, 23 इंटर कॉलेज ने ज्योति कलश यात्रा की सफलता में विशिष्ट योगदान दिया।

चाईबासा, प. सिंहभूम। झारखण्ड

झारखण्ड में चल रही ज्योति कलश यात्रा दिनांक 11 से 14 फरवरी की तिथियों में चाईबासा क्षेत्र में थी। लोगों ने तरह-तरह से अपने श्रद्धा सुमन समर्पित करते हुए अपने अनुभवों को अद्भुत, आश्चर्यजनक और अविस्मरणीय बताया। ग्रामीणों ने भावविह्वल होकर रथ का पूजन, नमन, वंदन और आरती की।

यात्रा गायत्री मंदिर परिसर टुंगरी से आरंभ हुई। जुबिली तालाब होते हुए बाँध पाड़ा, बाबा मंदिर सदर बाजार, शनि मंदिर आमला टोला, जेएमपी चौक स्थित हनुमान मंदिर, बस स्टैंड चौक, गाड़ीखाना मनसा मंदिर, रेलवे स्टेशन, गुरुद्वारा, नंद विला अपार्टमेंट, बड़ी बाजार, मोची साईं, सुपलसाईं आदि लगभग पूरे नगर का भ्रमण किया। जगह-जगह स्वागत-पूजन का क्रम रहा। समाज के हर वर्ग में नवयुग के स्वागत का उत्साह दिखाई दिया। ज्योति कलश के सान्निध्य में हुए कार्यक्रमों में देवस्थापनाएँ की गईं, गुरुदेव के साहित्य और पत्रिकाओं का वितरण, मंत्रलेखन और सदवाक्यों का प्रचार किया गया।

ज्योति कलश रथयात्रा के चाईबासा में भ्रमण में प्रखंड समन्वयक राम सागर साहू, श्रद्धा गुप्ता, अनीता गुप्ता, चंचल गुप्ता, समीर कुमार सिंह, शशि लता व महिला मंडल की महिलाएँ शामिल थीं।

विशिष्ट उपलब्धियाँ

ग्रामीणों ने स्वयंसेवकों के पैर धोकर उन्हें जलपान कराया। मझगाँव में मुस्लिम बस्ती में भी रथ का स्वागत हुआ, जहाँ मुस्लिम बच्चियाँ कार्यक्रम को देखकर आश्चर्यचकित थीं। मझगाँव के लोगों ने भविष्य में यज्ञ कराने की बात कही।

चाईबासा क्षेत्र में ज्योति कलश का पूजन करते श्रद्धालु

लोकमंगल का भाव जगाते यज्ञ समारोह

माँ भगवती महिला मंडल का गठन

बहिनों ने जन्मशताब्दी वर्ष की विशेष सक्रियता के लिये कमर कसी

सक्रियता का नेतृत्व कर रही नवगठित महिला मण्डल की बहिनें

बड़वानी। मध्यप्रदेश

बड़वानी जिले में मातृशक्ति ने संगठित होकर नवयुग के निर्माण में विशिष्ट योगदान देने का बीड़ा उठाया है। इस उद्देश्य से जिले में माँ भगवती महिला मंडल का गठन किया गया है। यह मण्डल शक्तिस्वरूपा परम वंदनीया माताजी की जन्मशताब्दी एवं अखण्ड दीप के शताब्दी वर्ष में उनकी विशिष्ट चेतना तथा शक्ति अनुदानों को जन-जन तक पहुँचाकर मानवता के उत्थान के लिए विशेष योजनाबद्ध सक्रियता अपनाएगा।

महिला मंडल की कार्ययोजना में प्रमुख रूप से जिलेभर में साधना अभियान को गतिशील करना, प्रत्येक तहसील में मंडल का गठन करना, बाल संस्कार शालाओं का संचालन, सामूहिक दीपयज्ञ, घरों में देवस्थापना, 24 बार गायत्री मंत्र जप, प्रति पूर्णिमा दीपयज्ञ, महिला जागृति अभियान और स्वाध्याय आदि कार्यक्रम शामिल हैं। इन दिनों प्रदेश में चल रही ज्योति कलश यात्राओं के माध्यम से गाँव-गाँव तक ऋषि संदेश और युग साहित्य पहुँचाने की योजना पर भी काम किया जा रहा है।

महिला मंडल में श्रीमती ममता तोमर को जिला प्रभारी, श्रीमती गायत्री दसौंधी को सहायक प्रभारी और सुश्री रुशीला डावर को सहयोगी के रूप में नियुक्त किया गया है। इसके साथ ही मीरा जी और पूजा जी को मार्गदर्शक नियुक्त किया गया है।

तहसील स्तर पर भी प्रभारी नियुक्त किए गए हैं। बड़वानी और पाटी के लिए श्रीमती सुरेखा पाटीदार, अंजड के लिए कांता चौहान, ठीकरी के लिए राजवता मेवाड़े, राजपुर के लिए ज्योति लोनारे, सेंधवा के लिए प्रीति वर्मा, वरला के लिए दुर्गा जाधव और पानसेमल के लिए चंचल पाटीदार को प्रभारी बनाया गया है।

नवगठित माँ भगवती महिला मंडल को जिला समन्वय और ट्रस्ट मंडल से शुभकामनाएँ प्राप्त हुईं हैं, जिसमें सभी के द्वार इसे सफलतापूर्वक लागू करने के लिए हर्ष व्यक्त किया गया।

शक्तिपीठ के स्थापना दिवस पर आस्था और साहित्य का संगम

गाडरवारा, नरसिंहपुर। मध्यप्रदेश

गायत्री शक्तिपीठ गाडरवारा की 38वीं वर्षगाँठ पर तीन दिवसीय पंच कुण्डीय गायत्री महायज्ञ का आयोजन किया गया। इस अवसर पर आध्यात्मिक कवि सम्मेलन का आयोजन भी किया गया था। यह कार्यक्रम साहित्य प्रेमियों और भक्तों के बीच एक महत्त्वपूर्ण सांस्कृतिक मिलन स्थल बना, जिसमें साहित्यकारों ने विभिन्न धार्मिक, सामाजिक और जीवनमूलक विषयों पर काव्य पाठ किया।

सम्मेलन में करेली के रामनारायण कौरव, रामअवधेश कौरव, कौड़िया के वृंदावन बैरागी कृष्णा, चिर्रिया के पीएस पुराणिया पांचाल, सिंहपुर छोटा के राजेश कौरव, सुमित्र और स्थानीय कवि कुशलेंद्र श्रीवास्तव कुशल, विजय जी, सुविज्ञा जी, राजेन्द्र राय, तुलसीराम उरधेया, रमाकांत गुप्ता, सुनील कौरव प्रवाह, डॉ. राजेन्द्र राय, केशव पचौरी और मूलचंद पटेल ने काव्यपाठ किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता साहित्यकार कुशलेंद्र श्रीवास्तव ने की, जबकि संचालन रामनारायण कौरव ने किया। गायत्री परिवार ने सभी साहित्यकारों को युगसाहित्य प्रदान कर सम्मानित किया।

फलती-फूलती संस्कार परम्परा

ग्वालियर। मध्यप्रदेश

ग्वालियर के रामानुज नगर में 10 से 12 फरवरी 2025 की तिथियों में 9 कुंडीय गायत्री महायज्ञ सम्पन्न हुआ। संस्कार परम्परा के पुनर्जीवन की दृष्टि से इस कार्यक्रम में उल्लेखनीय सफलता मिली। 20 दीक्षा संस्कार, 10 विद्यारंभ संस्कार और 5 जन्मदिन संस्कार भी सम्पन्न कराए गए। श्री बी.के. शर्मा और डॉ. विजय गर्ग की धर्मपत्नी डॉ. निधि गर्ग का पुंसवन संस्कार भी हुआ।

महायज्ञ का शुभारंभ 51 बहिनों द्वारा सिर पर कलश रखकर निकाली गई शोभायात्रा के साथ हुआ। यह यात्रा पर्यावरण सुरक्षा और दहेज प्रथा विरोधी बैनर तथा नारों के साथ निकाली गई थी। कॉलोनीवासियों ने पुष्पवर्षा कर उनका स्वागत किया।

महायज्ञ में 1500 श्रद्धालुओं ने भाग लिया। क्षेत्रीय विधायक श्री सतीश सिकरवार ने मंच पर पूज्य गुरुदेव और गायत्री माता के चित्रों पर माल्यार्पण किया और

ग्वालियर के यज्ञ में निकली कलश यात्रा

गायत्री परिवार को हर संभव मदद देने का संकल्प लिया। महायज्ञ के संयोजक डी.पी. शर्मा, अमर सिंह त्यागी, विजय सिंह बघेल और गायत्री शक्तिपीठ के प्रमुख ट्रस्टी वी.के. गुप्ता ने विधायक जी का स्वागत किया और उन्हें साहित्य भेंट किया। आसपास की कॉलोनियों से बड़ी संख्या में लोग दीप यज्ञ में भाग लेने आए थे।

गायत्री यज्ञ के साथ विद्यार्थियों को दी विदाई

करनाल। हरियाणा : करनाल के गवर्नमेंट हाई स्कूल, चौरपुरा में 19 फरवरी को गायत्री महायज्ञ का आयोजन किया गया। यह यज्ञ बोर्ड की परीक्षाएँ देने जा रहे कक्षा 10वीं के छात्र-छात्राओं की बेहतर सफलता की प्रार्थना के उद्देश्य से आयोजित किया गया था। यज्ञ में विद्यालय के प्रिंसिपल, सभी शिक्षकगण और कक्षा पाँचवीं से दसवीं तक के सभी विद्यार्थियों ने भाग लिया।

कार्यक्रम का संचालन श्री सतीश गौतम, श्री लखनलाल जी एवं श्री बलवीर जी ने किया। उन्होंने विद्यार्थियों में आत्मविश्वास बढ़ाने वाले और जीवन को श्रेष्ठता की ओर प्रेरित करने वाले परम पूज्य गुरुदेव के कुछ मार्मिक उद्धरण भी प्रस्तुत किये। उन्होंने सभी विद्यार्थियों को पूज्य गुरुदेव के साहित्य और मिशन की अखण्ड ज्योति, युग निर्माण योजना तथा प्रज्ञा अभियान पत्रिकाएँ पढ़ने की प्रेरणा दी, कहा कि इनके स्वाध्याय से मन अत्यंत सकारात्मक ऊर्जा से भर जाता है, मनोबल बढ़ता है।

विद्यालय के शिक्षकगण कार्यक्रम से बहुत प्रभावित हुए। उन्होंने बच्चों तक गुरुदेव के विचार पहुँचाते रहने का आश्वासन दिया। इस आयोजन से विद्यालय में एक सकारात्मक और प्रेरणादायक वातावरण विनिर्मित हुआ।

भा. सं. ज्ञान परीक्षा की राष्ट्रीय संगोष्ठी

भा.सं. ज्ञान परीक्षा में राष्ट्रीय स्तर पर अग्रणी योगदान देने वाले जिला प्रतिनिधियों को सम्मानित करते हुए शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि

वर्ष 2024 में जुड़े 38 लाख विद्यार्थी एक लाख विद्यालय दो लाख शिक्षक-शिक्षिकाएँ

दिनांक 1 एवं 2 मार्च 2025 की तिथियों में शान्तिकुञ्ज में भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा के प्रान्तीय समन्वयकों एवं पूरे देश में परीक्षा को संचालित करने में प्रमुख भूमिका निभा रहे जिला संयोजकों की राष्ट्रीय संगोष्ठी सम्पन्न हुई। देव संस्कृति विश्वविद्यालय के प्रति कुलपति आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने संबोधित करते हुए परीक्षा के उद्देश्य एवं राष्ट्र निर्माण में उसकी उपयोगिता पर प्रकाश डाला।

आदरणीय डॉ. चिन्मय जी ने कहा कि हमारी गुरुकुल परंपरा श्रेष्ठ मानवों को गढ़ने का साँचा हुआ करती थीं, जहाँ शिक्षा के साथ बच्चों को संस्कारवान बनाने पर विशेष ध्यान दिया जाता था। इन्हीं गुरुकुलों में भगवान राम, भगवान श्री कृष्ण जैसे महामानव गढ़े गये थे। गायत्री परिवार उसी संस्कार परम्परा को पुनर्जीवित कर धरती पर स्वर्ग की सृष्टि करने के परम पूज्य गुरुदेव के महान संकल्प को पूरा कर रहा है। भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा बच्चों को गुणवान और संस्कारवान बनाने के लिए चलाया गया एक श्रेष्ठ और अत्यंत सफल अभियान है।

लक्ष्य 2025 : इस वर्ष 1 लाख 51 हजार विद्यालयों तक भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा को पहुँचाने हेतु कार्य योजना बनाई गयी है।

आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने उपस्थित गणमान्यों को लक्ष्य बोध कराते हुए कहा कि हमारी संस्कृति का लक्ष्य समाज में 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना का पोषण है। आज समाज में शान्ति, समरसता बढ़ाने के लिए हमें इसी दिशा में काम करना है, जो कि इन दिनों की सबसे बड़ी आवश्यकता है।

श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी की प्रेरणा

राष्ट्रीय संगोष्ठी में आये प्रतिभागियों को श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी ने वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग से जुड़ते हुए संदेश दिया। उन्होंने भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा के व्यापक विस्तार में प्राणपन से जुड़े आत्मीय स्वजनों और शिक्षकों के महान योगदान का अभिनन्दन किया। उन्होंने कहा कि विद्यार्थी जीवन वह समय है जब बच्चों को सही शिक्षा, संस्कार और प्रेरणाओं की सबसे अधिक आवश्यकता होती है। इस दृष्टि से आप लाखों बच्चों के भविष्य को सँवारते हुए समाज और राष्ट्र के निर्माण में बहुमूल्य योगदान दे रहे हैं।

शान्तिकुञ्ज व्यवस्थापक श्री योगेन्द्र गिरी जी ने प्रतिभागी शिक्षक, जिला व प्रांतीय समन्वयकों को संस्कृति को बचाने के लिए प्रतिबद्धता के साथ कार्य करने के लिए प्रेरित किया।

भासंज्ञाप के राष्ट्रीय समन्वयक श्री रामयश तिवारी जी एवं श्री सुधीर श्रीपाद जी ने गत वर्ष की सफलताओं और विशिष्ट उपलब्धियों को साझा किया। राष्ट्रीय संगोष्ठी में 18 राज्यों के 390 प्रतिभागी उपस्थित थे। प्रांतीय समन्यक श्री शंकरभाई पटेल (गुजरात), श्री रामपाल तिवारी (छत्तीसगढ़), श्री शंकर लाल भांवरकर (महाराष्ट्र), श्री ताराचंद अग्रवाल (झारखण्ड), श्री बीएस ठाकुर (हिमालच प्रदेश), श्री एस.आर. चौधरी (मध्यप्रदेश) आदि की विशेष उपस्थिति रही।

अत्यंत ऊर्जादायी अनुभव, प्राणवान संकल्प उभरे

श्री रमाकांत आमेटा, प्रांतीय संयोजक, राजस्थान

बच्चों को भारतीय संस्कृति से परिचित कराने का यह बहुत श्रेष्ठ और प्रभावशाली माध्यम सिद्ध हो रहा है। सन् 2026 तक हम 50 लाख से अधिक बच्चों तक पहुँचने का संकल्प ले रहे हैं। भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा के अलावा विद्यालयों में सफाई अभियान, वृक्षारोपण, कुरीति उन्मूलन, उपासना, साधना, स्वाध्याय जैसी कई रचनात्मक गतिविधियाँ चलाई जा रही हैं। हम बच्चों को इनसे जोड़कर संस्कारवान, राष्ट्रनिष्ठ बच्चे समाज को समर्पित करेंगे।

श्री पी.सी. दास, प्रांतीय संयोजक, ओडिशा

यह राष्ट्र-निर्माण का एक अद्वितीय अभियान है। राष्ट्र को सही मायनों में स्वाधीन बनाने के लिए देशवासियों को अपनी गौरवशाली महान संस्कृति के अनुरूप ढालने की आवश्यकता थी। इस कार्य में भा.सं. ज्ञान परीक्षा की इसमें विशेष भूमिका है। यह बच्चों के जीवन को आरंभ से सही दिशा देती है।

श्री के.एल. सचदेवा, प्रांतीय संयोजक, दिल्ली राज्य

शान्तिकुञ्ज की ऊर्जा और प्रेरणा से भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा के माध्यम से बच्चों के व्यक्तित्व विकास का अद्वितीय कार्य हो रहा है। ज्ञान के साथ सम्मान देने की हमारी जो परम्परा है, वह बहुत प्रभावशाली है।

श्री शंकरभाई पटेल, प्रांतीय संयोजक, गुजरात

हर विद्यार्थी भारत वर्ष की गौरवशाली प्राचीन और आधुनिक संस्कृति से परिचित हो, इस महान समृद्ध विरासत के प्रति उसमें गौरव तथा अपनत्व की अनुभूति हो, ऐसा प्रयास भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा के द्वारा किया जाता है। हम विद्यार्थियों में विनय, विवेक, प्रेम, करुणा, दया, सदाचार, ईमानदारी, प्रामाणिकता जैसे जीवन मूल्यों की स्थापना करने में सफल हो रहे हैं, यही हमारी सबसे बड़ी सफलता है, यही परीक्षा का लक्ष्य है।

श्री शिवकुमार श्रीवास्तव, प्रांतीय संयोजक उत्तर प्रदेश

राष्ट्रीय संगोष्ठी में आए प्रतिनिधियों के अनुभव सुनकर हमें अपनी अनेक व्यावहारिक कठिनाइयों का समाधान मिला है। कई वक्ताओं ने हमें नई ऊर्जा से भर दिया है। हर प्रकार की हताशा-निराशा को दरकिनार कर चुनौतियों से जूझने और बड़े लक्ष्य प्राप्त करने का संकल्प इस संगोष्ठी से उभरा है।

श्री बी.एस. ठाकुर, प्रांतीय संयोजक, हिमाचल प्रदेश

महाकाल का घोंसला शान्तिकुञ्ज सदैव ही नई ऊर्जा और प्रेरणा देता रहा है। इस संगोष्ठी में आए हमारे साथियों में नए संकल्प उभरे हैं। गत वर्ष हमारे राज्य के लगभग 45,000 विद्यार्थी परीक्षा में शामिल हुए थे। इस वर्ष हम एक लाख विद्यार्थी शामिल करेंगे।

नई बेबसाइट : भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा की नई वेबसाइट का शुभारंभ हुआ है। राष्ट्रीय संगोष्ठी के प्रथम सत्र में आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने इसका विमोचन किया। लॉगऑन कीजिए : www.bsgp.awgp.org

सर्वाधिक विद्यार्थी परीक्षा में शामिल कराने वाले प्रथम दस जिलों को सम्मानित किया गया

आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने 14 राज्यों के प्रांतीय समन्वयकों तथा भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा को सर्वाधिक विद्यार्थियों तक पहुँचाने वाले 10 जिला समन्वयकों को प्रशस्ति पत्र, गायत्री मंत्र का उपवस्त्र आदि भेंटकर सम्मानित किया। संगोष्ठी के समापन सत्र में जिले में सर्वाधिक छात्र सम्मिलित करने वाले जिलों की सूची में प्रथम रहे राजस्थान के राजसमंद जिले के प्रतिनिधियों को शान्तिकुञ्ज के व्यवस्थापक श्री योगेन्द्र गिरि जी, भा.सं.ज्ञान परीक्षा के राष्ट्रीय संयोजक श्री रामयश तिवारी जी, श्री सुधीर श्रीपाद जी एवं अन्य गणमान्यों ने ट्रॉफी एवं प्रमाण पत्र भेंट कर सम्मानित किया।

टॉप 10 जिलों की सूची

क्रमांक	जिला/प्रान्त	संख्या
प्रथम	राजसमन्द, राजस्थान	1,02,970
द्वितीय	सूरत, गुजरात	97,177
तृतीय	बाँसवाड़ा, राजस्थान	84,814
चतुर्थ	उदयपुर, राजस्थान	56,130
पंचम	लखनऊ, उत्तर प्रदेश	50,236
छष्ठम	अहमदाबाद, गुजरात	48,706
सप्तम	साबरकांठा, गुजरात	46,221
अष्ठम	झालावाड़, राजस्थान	45,746
नवम	गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश	40,977
दशम	कानपुर नगर, उत्तर प्रदेश	40,007

राजसमंद जिले के प्रतिनिधियों को ट्रॉफी एवं प्रमाण पत्र प्रदान कर सम्मानित करते शान्तिकुञ्ज व्यवस्थापक

गायत्री तपोभूमि, मथुरा में युग निर्माण विद्यालय के नवीन सत्र का शुभारंभ

युग निर्माण विद्यालय, गायत्री तपोभूमि मथुरा, उत्तरप्रदेश में नियमित चलने वाला सत्र कोरोना संकट के कारण सन् 2020 से स्थगित कर दिया गया था। अब सामान्य परिस्थितियाँ हैं, परिजनों की माँग भी बहुत है, अतः **नए विषयों एवं विशेषताओं के साथ विद्यालय का सत्र 8 अप्रैल, 2025 से पुनः आरंभ किया जा रहा है।** इसके लिए इच्छुक छात्रों/परिजनों से आग्रह है कि प्रवेश हेतु आवेदन पत्र अविलंब मँगाकर 31 मार्च, 2025 तक यहाँ अवश्य भेज दें। प्रवेशार्थी 5 अप्रैल, 2025 तक गायत्री तपोभूमि, मथुरा अवश्य आ जाएँ।

6 एवं 7 अप्रैल को लिखित तथा मौखिक परीक्षाएँ होंगी। उत्तीर्ण परीक्षार्थियों को प्रवेश दिया जाएगा। 8 अप्रैल से ही कक्षाएँ चलने लगेंगी।

आयु : 14 से 20 वर्ष।

शिक्षा : हाईस्कूल या अधिक।

सत्र की अवधि : (अप्रैल 2025-मार्च 2026) विद्यालय में प्रवेश पाने वाले छात्र के लिए भोजन, आवास, प्रशिक्षण की व्यवस्था निःशुल्क होगी। प्रायोगिक कार्यों, ड्रेस, शैक्षणिक यात्रा (हरिद्वार, आँवलखेड़ा) आदि के लिए कुल 18000/-रुपये की राशि जमा करनी होगी।

सत्र में सिखाये जाने वाले विषय : पाक कला, आयुर्वेद, चिकित्सा, योगासन, प्राणायाम, फल संरक्षण, उद्योग (विभिन्न प्रकार की प्रिंटिंग, क्लॉथ प्रिंटिंग, कप प्रिंटिंग, लेजर कटिंग, फ्रेमिंग, रिपेयरिंग, लेमिनेशन, डेयरी, गो प्रोडक्ट, हैण्डवॉश, सर्फ, मोमबत्ती, पत्तल-दोने बनाना आदि) कंप्यूटर संबंधी सभी प्रमुख जानकारियाँ, सेल्स मार्केटिंग, एकाउण्टिंग, इलैक्ट्रीकल, साउण्ड, आध्यात्मिक नैतिक प्रशिक्षण, जीवन जीने की कला, हिन्दी-संस्कृत, सामान्य ज्योतिष, भाषण-संभाषण, लेखन कला, प्रूफ रीडिंग, यज्ञ-संस्कार, पर्व त्यौहारों की जानकारी एवं कर्मकांड प्रशिक्षण, संगीत (गायन, वादन का समुचित प्रशिक्षण) आदि की व्यवस्था रहेगी।

समस्त पत्र व्यवहार, फोन, ई-मेल के लिए संपर्क सूत्र पता- युग निर्माण योजना, गायत्री तपोभूमि, मथुरा-281003

फोन नं० : (0565) 2530115, 2530128, 2530399.- 09927086287, 09927086289

ई-मेल.: yugnirman@yugnirmanyojna.org

गायत्री तपोभूमि, मथुरा की वेबसाइट का लोकार्पण

दिनांक 22 फरवरी 2025 को श्रद्धेय श्री मृत्युंजय शर्मा जी के कर कमलों से गायत्री तपोभूमि, मथुरा की वेबसाइट का लोकार्पण सम्पन्न हुआ। इस वेबसाइट में गायत्री तपोभूमि, मथुरा में चलने वाले सभी कार्यक्रमों, शिविरों एवं साहित्य के संबंध में विस्तृत जानकारी उपलब्ध रहेगी।

वेबसाइटः www.yugnirmanyojna.org

गायत्री तपोभूमि के सोशल मीडिया पेजः

फेसबुकः https://www.facebook.com/profile.php?id=61573561736904

ट्विटरः https://x.com/yugnirman01953

इन्स्टाग्रामः htttps://www.instagram.com/yugnirmanyojnamathuraofficial

यू-ट्यूबः https://www.youtube.com/@yugnirmanyojnaofficial

व्हाट्सएप नं: 7055514422

पाप में पड़ना मानव प्रकृति है, उसमें डूबे रहना शैतान प्रकृति है। उस पर दुःखी होना सन्त प्रकृति है और सब पापों से मुक्त होना ईश प्रकृति है। -लांगफेलो

शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि का यूरोप प्रवास

विशिष्ट विभूतियों के साथ पू.गुरुदेव के अध्यात्म-दर्शन और युग परिवर्तन के मिशन पर चर्चा हुई

देव संस्कृति विश्वविद्यालय के प्रति कुलपति चांसलर आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी फरवरी माह में यूरोप यात्रा पर थे। इस यात्रा में उन्होंने ब्रिटिश संसद में वहाँ के मंत्री, सांसद एवं गणमान्यों को संबोधित किया। इस यात्रा में उन्होंने इंग्लैण्ड में वैश्विक संगठन, शिक्षा, उद्योग आदि क्षेत्र की अनेक शीर्ष हस्तियों से भेंट की। लातवियाई मूल के श्रद्धालुओं के बीच गायत्री यज्ञ, उद्बोधन का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। पोलैण्ड के रॉक्लॉ नगर के मेयर ने उन्हें अपना सर्वोच्च नागरिक सम्मान प्रदान किया। यह सभी समाचार पाठक प्रज्ञा अभियान के गत अंक में पृष्ठ 1 एवं 7 पर पढ़ चुके हैं। प्रस्तुत हैं उनके इस महत्त्वपूर्ण प्रवास के कुछ और समाचार।

माननीय वाणिज्यदूत श्री कार्तिकेय जौहरी से मिले

पोलैंड में आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी को भारत के माननीय वाणिज्यदूत श्री एवं श्रीमती कार्तिकेय जौहरी से भेंट करने का सुअवसर मिला। जौहरी दम्पति ने बड़ी आत्मीयता और शालीनता के साथ एक पारिवारिक सदस्य के भाव से शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि का स्वागत किया। उनकी परम पूज्य गुरुदेव के प्रति इस निष्ठा से भावविभोर डॉ. चिन्मय जी ने उनकी आत्मीयता के लिए आभार व्यक्त किया।

श्री कार्तिकेय जौहरी एवं अन्य गणमान्यों के साथ शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी

माननीय श्री जौहरी जी के साथ हुई भेंट के अवसर पर दुबई के उद्योगपति श्री अरिंदम बोस, पोलैंड के उद्योगपति श्री आशुतोष जौहरी और श्री योगेश शर्मा जी सहित कई प्रसिद्ध हस्तियों से भेंट वार्ता हुई। उनके साथ पूज्य गुरुदेव और वंदनीया माताजी के युग को बदल देने वाले दृष्टिकोण को साझा किया गया। शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि ने अध्यात्म के विशुद्ध स्वरूप और शाश्वत सिद्धांतों को पुनःस्थापित करने में उनके तप और विचारों के प्रभाव के सत्परिणामों की चर्चा की। उन्होंने बताया कि पूज्य गुरुदेव की दिव्य चेतना के प्रभाव से कैसे जनमानस बदलता जा रहा है।

डॉ. चिन्मय जी के व्यक्तित्व और विचारों से सभी बहुत प्रभावित हुए। सभी ने मानवमात्र के उज्ज्वल भविष्य एवं बेहतर विश्व व्यवस्था के निर्माण के लिए इन शाश्वत मूल्यों के विस्तार में सहयोग करने का आश्वासन दिया।

रॉक्लॉ में जनरल क्रास्जेव्स्की, पोलिश सेना के पूर्व प्रमुख फादर एंड्रयू टॉमको, श्री मैसीज विटको और फादर क्रिस्टोफ किलोविच से मिलने का सुअवसर प्राप्त हुआ। अपनी विनम्रता एवं व्यक्तित्व से भारतीय अध्यात्म के उदात्त मूल्यों का प्रतिनिधित्व कर रहे आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी का बड़ी गर्मजोशी से स्वागत किया, असाधारण सम्मान दिया। शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि ने इस सम्मान के लिए उनका आभार व्यक्त करते हुए परम पूज्य गुरुदेव जैसी विराट चेतना के साथ जुड़ने को अपने जीवन का दुर्लभ सौभाग्य बताया।

प.पू. गुरुदेव एवं परम वंदनीया माताजी के नवयुग के निर्माण के दृष्टिकोण पर विस्तार से चर्चा हुई। सभी को गायत्री परिवार के लक्ष्य एवं गतिविधियों का बारीकी से अध्ययन करने का आमंत्रण दिया गया। भारत और पोलैंड के बीच सांस्कृतिक संबंधों को मजबूत करने तथा वैश्विक शान्ति, सद्भाव बढ़ाने में बढ़चढ़कर योगदान करने के विषयों पर भी विचार विनिमय किया गया।

विशाखापत्तनम में ज्योति कलश यात्रा सम्मेलन

भारत के दक्षिणी राज्यों में ज्योति कलश यात्राओं का शुभारंभ

पूर्व उपराष्ट्रपति श्री वेंकैया नायडू जी ने दिखाई झंडी

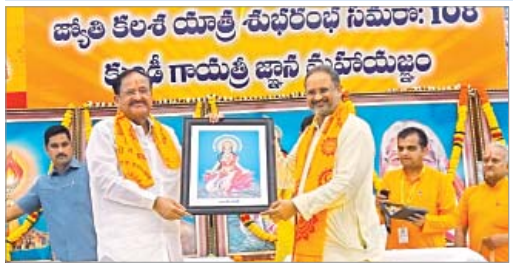

माननीय श्री वेंकैया नायडू जी का सम्मान

प्राण प्रतिष्ठा स्मारक शिलापट्ट का पूजन

चेतना केन्द्र में प्राण प्रतिष्ठा

संगोष्ठी से पूर्व आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने विशाखापत्तनम स्थित गायत्री चेतना केंद्र में नवनिर्मित वेदमाता आदिशक्ति माँ गायत्री माता मंदिर की प्राण प्रतिष्ठा की।

विशाखापट्टनम। आंध्र प्रदेश

परम वन्दनीया माता भगवती देवी शर्मा जी एवं दिव्य अखण्ड दीप के शताब्दी समारोह के अंतर्गत 27 फरवरी को गायत्री चेतना केंद्र, विशाखापत्तनम में 'ज्योति कलश यात्रा सम्मेलन' का भव्य आयोजन हुआ। देव संस्कृति विश्वविद्यालय के प्रति कुलपति आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी की विशेष उपस्थिति में भारत के पूर्व उप राष्ट्रपति माननीय श्री एम. वेंकैया नायडू जी इस समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। सम्मेलन के अंत में माननीय श्री वेंकैया जी ने दक्षिण भारत के राज्यों में भ्रमण करते हुए नवयुग के निर्माण का संदेश जन-जन तक पहुँचाने के लिए ज्योति कलश रथ यात्रा को रवाना किया।

आदरणीय डॉ. चिन्मय जी ने कार्यक्रम की पृष्ठभूमि पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि भारत त्याग, तप, दया, करुणा, वसुधैव कुटुम्बकम की भावना जैसे दिव्य गुणों से युक्त देवमानवों का देश है। गायत्री परिवार समाज व राष्ट्र के नवनिर्माण के लिए इन्हीं आध्यात्मिक और नैतिक मूल्यों को केंद्र में रखकर कार्य कर रहा है। भीतर की श्रेष्ठ संभावनाओं को जगाकर हम मनुष्य जीवन को सार्थक करें, यही हमारा लक्ष्य है।

इससे पूर्व शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि ने संगोष्ठी में पधारे समस्त अतिथियों का स्वागत किया। उन्होंने अपने उद्बोधन में अनेक समसामयिक विषयों पर परम पूज्य गुरुदेव पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी के विचारों से श्रोताओं को अवगत कराया।

संगोष्ठी के अंत में सभी अतिथियों को स्मृति चिन्ह भेंट किए गए, साथ ही सभी विशिष्ट अतिथियों को शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार आने के लिए आमंत्रित किया गया। इस अवसर पर बड़ी संख्या में श्रद्धालु, गणमान्य नागरिक, समाजसेवी एवं गायत्री परिवार के कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

विशिष्ट अतिथियों ने शक्ति कलश रथ को झंडी दिखाकर दक्षिण भारत के विभिन्न स्थलों के लिए रवाना किया। इस अवसर पर क्षेत्र के विधायक एवं टीडीपी के अध्यक्ष श्री पल्ला श्रीनू जी उपस्थित थे। उन्होंने आध्यात्मिक जनजागरण के इस विशिष्ट अभियान के शुभारंभ पर अपनी उपस्थिति को अपना सौभाग्य बताया।

जाग्रत तीर्थ है शान्तिकुञ्ज

- माननीय उपराष्ट्रपति जी

माननीय श्री एम. वेंकैया नायडू जी ने संगोष्ठी को अपनी मातृभाषा तेलुगू में संबोधित किया। उन्होंने परम पूज्य गुरुदेव पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी के विचारों को आधार बना कर अपनी शान्तिकुञ्ज एवं देव संस्कृति विश्वविद्यालय की यात्रा के अनुभव साझा किये। इस अवसर पर उन्होंने गायत्री परिवार के मुख्यालय शान्तिकुञ्ज को एक जाग्रत तीर्थ बताया। उन्होंने भारतीय संस्कृति व आध्यात्मिकता के महत्त्व को रेखांकित करते हुए कहा कि गायत्री परिवार का मिशन व्यक्ति, परिवार और समाज निर्माण के लिए अत्यंत प्रासंगिक है। साथ ही उन्होंने युवाओं से इस आंदोलन के साथ जुड़ने का आह्वान किया।

लिथुआनिया में भारतीय राजदूत के साथ सांस्कृतिक एवं राजनयिक संबंधों की प्रगाढ़ता पर चर्चा हुई

माननीय श्री देवेश उत्तम एवं चर्चा में शामिल लिथुआनिया की गणमान्य हस्तियाँ

देव संस्कृति विश्वविद्यालय के प्रति कुलपति आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने लिथुआनिया गणराज्य में पहुँचकर वहाँ भारत के माननीय राजदूत श्री देवेश उत्तम तथा भारत और लिथुआनिया के बीच सांस्कृतिक व राजनयिक संबंधों को मजबूत करने के लिए समर्पित कुछ विशिष्ट गणमान्य व्यक्तियों से भेंट की। सभी के साथ बड़ी आत्मीयतापूर्ण एवं आनन्ददायी वार्ता हुई, जो शिक्षा, संस्कृति और अध्यात्म के विस्तार से दोनों देशों के बीच के संबंधों को और प्रगाढ़ करने पर केन्द्रित थी। विचारों का बड़ा ही सार्थक और व्यावहारिक आदान-प्रदान हुआ। शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि ने सभी के सुझावों का स्वागत करते हुए उनके भावभरे आतिथ्य के लिए हृदय की गहराई से आभार व्यक्त किया। चर्चा में सभी ने पूज्य गुरुदेव के विचार एवं जीवन मूल्यों को आधार बनाकर वैश्विक शांति, सद्भाव और सामूहिक प्रगति को बढ़ावा देने के मिशन पर साथ-साथ प्रयास करने की प्रतिबद्धता दर्शायी।

अपनों के संग आत्मीयता, विशिष्ट हस्तियों का सम्मान

आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी नगर की गणमान्य हस्तियों और आत्मीय परिजनों को सम्मानित करते हुए

विशाखापट्टनम। आंध्र प्रदेश

ज्योति कलश यात्रा सम्मेलन में भाग लेने एवं गायत्री चेतना केन्द्र विशाखापट्टनम की प्राण प्रतिष्ठा के लिए पहुँचे अखिल विश्व गायत्री परिवार के युवा युगनायक आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी का 26 फरवरी को हवाई अड्डे पर भव्य स्वागत किया गया। शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि ने भी अपनी विशाखापट्टनम यात्रा में आत्मीय स्वजनों के बीच आत्मीयता विस्तार में कोई कोर कसर नहीं रखी। वे अनेक परिवारों में गए, उनकी कुशलक्षेम जानी और भावी सक्रियता के लिए उत्साहवर्धन किया।

शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि ने शहर की कई हस्तियों से मुलाकात की, जिनमें स्टील सिटी के प्रमुख उद्योगपतियों और प्रशासनिक अधिकारियों का विशेष रूप से समावेश रहा। वे सीएमडी एवं सीईओ डॉ. सतीश कुमार आर्य, चेयरमैन श्री के. सत्यनारायण जी और आरसी एंटरप्राइजेज के एमडी श्री डी. आर. राजू से मिलने पहुँचे। इस मुलाकात में उन्होंने गायत्री परिवार के सामाजिक और आध्यात्मिक उद्देश्यों पर चर्चा की। मानव जीवन की गरिमा का स्मरण कराया और परम पूज्य गुरुदेव की प्रेरणा के अनुसार अपनी प्रतिभा, समय, प्रभाव, संपदा को सामाजिक उत्थान के लिए नियोजित कर जीवन धन्य बनाने की प्रेरणा दी। गणमान्यों ने अपनी सकारात्मक प्रतिक्रियाएँ एवं महत्त्वपूर्ण सुझाव दिये।

जो मनुष्य सांसारिक विषयों की हानि देखकर रोता है, वह मूर्ख है। ऐसी हानि होने पर ही आत्मा का विचार करने तथा ईश्वर का ध्यान करने का अवसर मिलता है। -टॉलस्टॉय

प्रज्ञेश्वर महादेव मंदिर परिसर में आयोजित हुआ
रुद्राभिषेक का भव्य कार्यक्रम

सीमित साधनों में जीवनयापन और लोकमंगल के लिए अधिकाधिक समर्पण, यही है शिव का दर्शन। -श्रद्धेया शैल जीजी

गायत्रीतीर्थ शान्तिकुञ्ज में शिव और शक्ति के मिलन का महापर्व महाशिवरात्रि युगानुकूल प्रेरणाओं के साथ बड़े भक्तिभावपूर्वक मनाया गया। देव संस्कृति विश्वविद्यालय में स्थित प्रज्ञेश्वर महादेव में रुद्राभिषेक का विशाल कार्यक्रम आयोजित किया गया था। श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी एवं श्रद्धेया शैल जीजी ने गायत्री परिवार के करोड़ों श्रद्धालुओं का प्रतिनिधित्व करते हुए रुद्राष्टकम्, पुरुष सूक्त एवं अन्य वैदिक कर्मकांड से युक्त पूरे विधि-विधान से रुद्राभिषेक किया। सुर-संगीत और प्रज्ञागीतों से शृंगारित इस दिव्य कर्मकाण्ड ने सभी श्रोताओं के अंतःकरण में शिवत्व का संचार किया।

देव संस्कृति विश्वविद्यालय के कुलाधिपति श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी ने कहा कि शिव औघड़ दानी और परम कल्याणकारी हैं। उनके भावपूर्ण पूजन से मनुष्य के उत्कर्ष की अनन्त संभावनाएँ जाग्रत होती हैं।

श्रद्धेया शैल जीजी ने शिव का दर्शन समझाया। उन्होंने कहा कि स्वयं कम से कम साधनों में काम चलाते हुए दूसरों को बहुमूल्य उपहार देना, यही शिवत्व की सच्ची

भावना है। इन आदर्शों को जीने वाले हमारे इष्ट, हमारे आदर्श परम पूज्य गुरुदेव एवं परम वंदनीया माताजी का जीवन हमें यही प्रेरणा देता है।

देव संस्कृति विश्वविद्यालय के प्रति कुलपति आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या ने अपने संदेश में कहा कि महाशिवरात्रि आध्यात्मिक दृष्टि से सबसे ज्यादा समृद्ध पर्व है। शव को शिव में तथा रात्रि को महाशिवरात्रि में बदलने के लिए यह महापर्व मनाया जाता है।

रुद्राभिषेक के अवसर पर पूरा मंदिर परिसर शिवभक्तों के भक्तिभाव से ओतप्रोत रहा। मस्तक पर त्रिपुण्ड और मन में 'ओम नमः शिवाय' के भाव के साथ अपने जीवन को श्रेष्ठता की ओर अग्रसर करने की प्रार्थनाएँ होती रहीं। अपनी गुरुसत्ता के सतयुगी संकल्पों को साकार करने के लिए लोकमंगल की ओर दृढ़ता से कदम बढ़ाने के भाव उभरते रहे। इस अवसर पर विभिन्न देशों से आये शिवभक्तों सहित देवसंस्कृति विवि के समस्त स्टाफ, विद्यार्थियों, शान्तिकुञ्ज के अंतेःवासी कार्यकर्त्ता एवं भारत के कोने-कोने से आये साधकगण उपस्थित थे।

विभिन्न शिवालयों में रुद्राभिषेक

शान्तिकुञ्ज परिसर में स्वयं परम पूज्य गुरुदेव द्वारा प्राण प्रतिष्ठित महाकाल मंदिर में, सप्तऋषि क्षेत्र में और देव संस्कृति विश्वविद्यालय स्थित सिद्धेश्वर महादेव में भी हजारों श्रद्धालुओं ने कई पारी में रुद्राभिषेक, पूजन-प्रार्थना के कार्यक्रम सम्पन्न किये।

देव संस्कृति दिग्दर्शन प्रदर्शनी

शान्तिकुञ्ज के हरीतिमा देवालय क्षेत्र में स्थित देव संस्कृति दिग्दर्शन प्रदर्शनी का नवीनीकरण किया गया है। आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी एवं आदरणीया शेफाली जी ने महाशिवरात्रि के दिन इस प्रदर्शनी का उद्घाटन किया।

महाकुम्भ में स्नान के बाद गायत्रीतीर्थ की चेतना को आत्मसात करने शान्तिकुञ्ज आया रशियन साधकों का दल

अलौकिक अनुभूतियाँ हुईं, कहा, "शान्तिकुञ्ज का वातावरण मानसिक शान्ति, सकारात्मक ऊर्जा और आध्यात्मिक विकास की दिशा प्रदान करता है।

आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी रशियन साधकों को सम्मानित करते हुए

रूस से उच्च प्रशिक्षित व आईटी प्रोफेशनल्स का एक दल महाकुम्भ प्रयागराज की तीर्थ चेतना का लाभ लेने के पश्चात् शान्तिकुञ्ज आया। इस 11 सदस्यीय दल ने यहाँ रहकर पूरे विधि-विधान के साथ गायत्री साधना अनुष्ठान सम्पन्न किया। प्रतिदिन आरती, ध्यान, अखण्ड दीप दर्शन, यज्ञ आदि गतिविधियों में भाग लेने के साथ यहाँ के कण-कण में समाई परम पूज्य गुरुदेव एवं परम वंदनीया माताजी की प्रखर प्राण ऊर्जा को अनुभव करते हुए वे भावविभोर थे। उन्हें कई चमत्कारिक अनुभूतियाँ भी हुईं।

शान्तिकुञ्ज आये समस्त विदेशी भाई-बहिन पहले से ही मिशन के वैज्ञानिक अध्यात्मवाद से बहुत प्रभावित हैं। उन्हें श्रद्धेय डॉक्टर प्रणव पण्ड्या जी और आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी से उनके रूस प्रवास के समय प्रेरणा, मार्गदर्शन प्राप्त होता रहा है। वे गायत्री उपासक हैं।

वर्तमान में शान्तिकुञ्ज की तीर्थ चेतना के सेवन के साथ भी उन्हें श्रद्धेय डॉ. साहब और श्रद्धेया जीजी से स्नेहाशीष एवं मार्गदर्शन प्राप्त करने का अवसर मिला। आदरणीय डॉ. चिन्मय जी से विशिष्ट चर्चा हुई, जिसमें उन्हें अपनी अनेक जिज्ञासाओं के समाधान के साथ जीवन को उत्कृष्टता की ओर ले जाने के बहुमूल्य सूत्र मिले। देव संस्कृति विश्वविद्यालय के प्रति कुलपति जी ने उन्हें सम्मानित करते हुए मानवता के उज्ज्वल भविष्य के लिए गायत्री उपासना से अपने व्यक्तित्व को प्रखर बनाने और उस ऊर्जा से अपने देशवासियों को लाभान्वित करने की प्रेरणा दी।

रूसी अतिथियों ने अपनी इस यात्रा को एक अद्भुत आध्यात्मिक अनुभव बताया। उन्होंने कहा कि शान्तिकुञ्ज का वातावरण उन्हें मानसिक शान्ति, सकारात्मक ऊर्जा और आध्यात्मिक विकास की दिशा प्रदान करता है।

'डीबीयूयू आइडल 2025' के विजेता बने देसंविवि के छात्र प्रखर शर्मा

22 फरवरी 2025 को देवभूमि उत्तराखंड विश्वविद्यालय (डीबीयूयू) और सुरताल क्लब द्वारा एक प्रतिष्ठित प्रतियोगिता डीबीयूयू आइडल 2025 का आयोजन किया गया था। देव संस्कृति विश्वविद्यालय के छात्र प्रखर शर्मा ने इसमें भाग लिया और विजेता बने। देव संस्कृति विश्वविद्यालय के प्रति कुलपति आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने अपने विद्यार्थी की इस शानदार उपलब्धि पर बधाई दी और उज्ज्वल भविष्य के लिए अपनी शुभकामनाएँ प्रदान कीं। उन्होंने कहा कि यह सफलता चि. प्रखर की प्रतिभा, समर्पण और विवि. के सकारात्मक, सृजनात्मक पोषक वातावरण के प्रभाव का सत्परिणाम है।

चि. प्रखर ने अपने प्रति कुलपति जी के प्रति श्रद्धानवत होकर आशीर्वाद लेते हुए कहा कि उनके मार्गदर्शन से विद्यार्थियों को नई ऊँचाइयों तक पहुँचने और समाज में सकारात्मक योगदान देने की प्रेरणा मिलती है।

योग दिलों और दिमागों को जोड़ने की यात्रा है

देव संस्कृति विश्वविद्यालय आए अंतर्राष्ट्रीय दल से साझा किए विचार

ईशावास्यम् योग विद्यालय, ऋषिकेश, उत्तराखण्ड के छात्रों का एक दल अपनी आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक जिज्ञासाओं को लेकर शान्तिकुञ्ज, देव संस्कृति विश्वविद्यालय, हरिद्वार आया। दल के सदस्य देसंविवि के प्रति कुलपति आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी से मिलने का सौभाग्य पाकर भावविभोर थे। दल के सदस्यों ने उनके साथ हुई चर्चा को अत्यंत प्रेरणादायक और ज्ञानवर्धक बताया। उन्होंने कहा कि इस वार्ता में उन्हें योग, आध्यात्मिकता और भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को गहराई से समझने का अवसर मिला।

डॉ. चिन्मय जी ईशावास्यम योग विद्यालय के साधकों को सम्मानित करते हुए

इस दल में कई देशों के सदस्य-इमोजेन (यूके), सैम (ईरान), जोल्फागर (जर्मनी), अन्ना (जर्मनी) और सोलेन (स्पेन) शामिल थे। परम पूज्य गुरुदेव के विचारों और शान्तिकुञ्ज की प्रेरणाओं को हृदयंगम करते हुए उन्होंने अनुभव किया कि योग केवल एक अभ्यास नहीं है, बल्कि एक यात्रा है जो दुनिया भर में दिलों और दिमागों को जोड़ती है। विदेशी अतिथियों ने अपने इस समृद्ध ज्ञान व अनुभव के लिए आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी का आभार व्यक्त किया।

प्राचीन ज्ञान और आधुनिक शिक्षा के समन्वय की प्रेरणा लेकर लौटा संजीवनी इंस्टिट्यूट ऑफ फार्मेसी, बिलासपुर का दल

संजीवनी इंस्टिट्यूट ऑफ फार्मेसी, गनियारी, बिलासपुर, छत्तीसगढ़ के 36 छात्रों का एक दल 6 सहयोगी स्टाफ के साथ देव संस्कृति विश्वविद्यालय, हरिद्वार आया। विवि के प्रति कुलपति आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने अत्यंत भावभरे अंतःकरण के साथ उनका स्वागत किया। दल का मार्गदर्शन करते हुए उन्होंने प्राचीन ज्ञान को आधुनिक शिक्षा के साथ एकीकृत करने की आवश्यकता संबंधी अपने विचार साझा किये। उन्होंने कहा कि हमारा प्राचीन

आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी के संग संजीवनी इं. ऑफ फार्मेसी के विद्यार्थी

आध्यात्मिक ज्ञान मनुष्य को सद्गुणी, संस्कारवान, समाजसेवी बनाता है। चर्चा में समग्र शिक्षा अनुसंधान के लिए परस्पर सहयोग की संभावनाओं का मार्ग प्रशस्त हुआ। अतिथि प्रतिनिधिमंडल इस उपलब्धि से बहुत उत्साहित होकर लौटा।

श्रीमती शैलबाला पण्ड्या शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार स्वामी श्री वेदमाता गायत्री ट्रस्ट (टीएमडी) गायत्री नगर, श्रीरामपुरम, शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार द्वारा प्रकाशित तथा उत्तर भारत लाइव, एच.सी.एल. कम्पाउण्ड, सहारनपुर रोड़, निरंजनपुर, देहरादून-248001 (उत्तराखंड) में मुद्रित।
संपादक- प्रमोद शर्मा। **पता** :- शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार (उत्तराखंड), पिन 249411. फोन-(01334) 260602

सम्पर्क सूत्र : पंजीयन एवं पूछताछ
फोन : 01334-311004, 9258369725
ईमेल : pragyaabhiyan@awgp.in
समाचार प्रेषण : news@awgp.org

Publication date: 12.03.2025
Place: Shantikunj, Haridwar
RNI-NO.38653/ 1980
Postel R.No. UA/DO/DDN/ 16 / 2024-26
Licenced to Post Without Prepayment vide WPP No. 04/2024-26